Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

समता धम्ममुदाहरे मुणी।
मुनि समता धर्म का निरूपण करे।

❋❋❋

सुहुमे सल्ले दुरुद्धरे।
वंदना-पूजा ऐसा सूक्ष्म शल्य है जो सरलता से नहीं निकाला जा सकता।

• नई दिल्ली • वर्ष 23 • अंक 8 • 29 नवंबर - 5 दिसंबर, 2021 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 27-11-2021 • पेज : 12 • ₹ 10

चातुर्मासिक मंगलभावना समारोह

चातुर्मास में भीलवाड़ा की धरा बनी तपोभूमि - आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, १८ नवंबर, २०२१

तीर्थंकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि आदमी के सामने वर्तमान जीवन है और सिद्धांत कहता है कि इस जीवन के बाद भी आत्मा का अस्तित्व रहने वाला है। संसारी अवस्था में मृत्यु के बाद फिर जीवन भी होता है। जन्म और मृत्यु एक ऐसा युगल है कि जन्म है, तो मृत्यु अवश्यंभावी है।

आदमी को अपने वर्तमान जन्म के हित के लिए और आत्मा के लिए बहुश्रुत की पर्युपासना करनी चाहिए। इहलोक और परलोक हित हो सके, सुगति हो सके। बहुश्रुत से प्रश्न करना चाहिए और अर्थ का विनिश्चय करना चाहिए। जिज्ञासा करनी चाहिए। योग्य व्यक्ति से प्रश्न करना चाहिए, जहाँ लाभ हो सके।

बहुश्रुत से आशा की जा सकती है कि उत्तर मिल सकता है। ज्ञान एक ऐसा है, जिसमें तारतम्य भी होता है। ज्ञानी, संयमी और साधनाशील से पूछना चाहिए। जो पूछता है, उत्तर को सुनता है, फिर उसको धारण कर लेता है, यह जिस जिज्ञासु विद्यार्थी का क्रम होता है, उसकी बुद्धि-ज्ञान बढ़ता है। जैसे सूर्य से कमलिनी विकसित हो जाती है।

चतुर्मास का समय एक ज्ञानाराधना का अनुकूल समय हो सकता है। आगम संपादन का अच्छा कार्य हो सकता है। कार्य करने में बड़ी आसानी हो सकती है। भीलवाड़ा में चतुर्मास संपन्नता की ओर है। कितने साधु-साध्वियाँ यहाँ रहे हैं। यह तपोभूमि बन गई। कितने मकानों में चतुर्मास हुआ है। कितनी तपस्याएँ हुई हैं। ज्ञानाराधना भी कितनी हुई है। श्रावक-श्राविकाओं को भी लाभ मिला है।

मिगसरवद एकम को सभी चारित्रात्माओं के विहार हो जाएँ। मुहूर्त की चिंता नहीं। एकम तो हमारे लिए वरदान है। विहार तो हमारे लिए अच्छा है। 'पानी तो बहता भला, पडया गंदीला होय। साधु तो रमता भला, दाग न लागे कोय।' कितने साधु-साध्वियाँ, समणियाँ एवं मुमुक्षु बहने यहाँ रहीं। भीलवाड़ा का चतुर्मास अनेक दृष्टियों से अच्छा रहा है। कुछ विशिष्ट भी रहा है, ऐसा लग रहा है। यात्रा में भी अच्छा उपकार किया जा सकता है। नया-नया जनसंपर्क होता है।

कुमार श्रमण केशी ने राजा परदेशी जैसे को प्रतिबोधित कर दिया। हमारे साधु-साध्वियाँ कुमार श्रमण केशी जैसे हो। जो ऐसे समझा सके। प्रतिभा का अच्छा उपयोग हो। ज्ञान के लिए स्वाध्याय होता रहे तो ज्ञान में नवीनता आ सकती है। ज्ञान में नवोन्मेष आते रहें। चतुर्मास की संपन्नता निकट आ रही है। हमारे ज्ञान-दर्शन की पुष्टि, चारित्र का विकास करणीय विकास अच्छा होता रहे। श्रावक-श्राविकाओं में भी व गृहस्थों में भी विकास होता रहे, यह काम्य है।

पूज्यप्रवर ने विहार संबंधी प्रेरणा प्रदान करवाई। हाजरी का वाचन किया। शैक्ष साधु-साध्वियों को ज्ञान के विकास की प्रेरणा प्रदान करवाई। नई चीज मिले वो नोट करते जाएँ। साध्वीप्रमुखाश्री जी का विहार हमारे साथ ही है। न्यारा में विचरण कर जयपुर जल्दी पहुँचें। वैक्सीन एवं दवाई संबंधी का प्रायश्चित दिखाया।

(शेष पृष्ठ २ पर)

प्रवचन में मेवाड़ राजघराने से उदयपुर के राजकुमार लक्षराजसिंह मेवाड़ पूज्यप्रवर की सन्निधि पहुँचे। आचार्यप्रवर के दर्शन के पश्चात राजकुमार गुरु चरणों के पास बैठ गए जैसे कोई भक्त भगवान के पास बैठा हो। कार्यकर्ताओं द्वारा कुर्सी पर बैठने के निवेदन को अस्वीकार कर वे गुरु चरणों में ही बैठे रहे। अपने वक्तव्य में लक्षराजसिंह ने कहा कि यह मेरा परम सौभाग्य है कि मुझे गुरु चरणों में बैठने का अवसर मिला है। आपकी कृपा सदैव मुझ पर बनी रहे, यही कामना करता हूँ।

पूज्यप्रवर ने मंगल आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा कि मन में सेवा की भावना हो और शांति का उपयोग दूसरों की सेवा, सहायता में लगे तो अच्छा कार्य हो सकता है। प्रवचन के पश्चात भी राजकुमार ने आचार्यप्रवर की उपासना में कुछ देर रहने के पश्चात अपने गंतव्य की ओर प्रस्थान किया।

पूर्व उपमुख्यमंत्री सचिन पायलट आचार्यप्रवर की सन्निधि में

जीवन विज्ञान दिवस

जीवन विज्ञान से विद्यार्थी का मानसिक और भावनात्मक विकास होता है : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, १७ नवंबर, २०१२

मंगलभावना समारोह के कार्यक्रम में महापरिव्राजक, अध्यात्म योगी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि पुरुष अनेक चित्त वाला होता है। हमारे भीतर भाव जगत भी है। हमारे जीवन में जहाँ शरीर, वाणी, मन, इंद्रियाँ, पर्याप्तियाँ-प्राण, आत्मा और कर्म है। कार्मण और तेजस शरीर भी है। यों अनेक चीजों से घटित अनेक घटक तत्त्वों से बना हुआ यह हमारा जीवन है।

संक्षेप में आत्मा और शरीर इन दो को भी या जड़ और चेतन इन दो को ही हमारे जीवन के मूल आधारभूत तत्त्व माना जा सकता है। हमारे भीतर भाव भी उभरते रहते हैं। विरोधी भाव भी व्यवहार में प्रकट हो जाते हैं। आदमी के भीतर अहिंसा का भाव भी है। और हिंसा का भाव भी सामान्य आदमी में आ जाता है।

(शेष पृष्ठ २ पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
29 नवंबर - 5 दिसंबर, 2021

✦ *जिसकी जैसी भावना होती है, वैसे ही कर्मों का बंध हो जाता है और परिणामस्वरूप वैसा ही फल भोगना पड़ता है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

अहिंसा यात्रा पुनः गतिमान

समता की साधना कर बने विशेष प्रसन्न : आचार्यश्री महाश्रमण

मंगरोप, २० नवंबर, २०२१

मेवाड़ भूमि की वस्त्र नगरी भीलवाड़ा के आदित्य विहार में ऐतिहासिक चातुर्मास की संपन्नता के पश्चात जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकाशन अधिशास्ता, अरुण परिव्राजक, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने तेरापंथ नगर में प्रातः ८:४१ बजे अपने चरण गतिमान मिले तो भीलवाड़ावासियों की भावनाएँ अश्रुधारा बनकर बहने लगी। हर कोई अपने आराध्य को जाते हुए निहार रहा था। प्रकृति भी भीलवाड़ावासियों की अश्रुधारा के साथ नम होकर बरस रही थी। भीलवाड़ावासी अपने आराध्य को अनचाहे मन से विदा कर रहे थे उनकी भावना सजल नेत्रों के साथ आचार्यप्रवर को रुकने के लिए निवेदन कर रही थी। परंतु चातुर्मास पश्चात महासाधक आचार्यप्रवर ने ज्यों ही प्रस्थान किया तो जयघोष के साथ जनमेदिनी भी अपने आराध्य का अनुसरण करते हुए चल पड़ी। हल्की बूँदा-बाँदी के बीच भी आचार्यप्रवर अपनी धवल सेना के साथ १२:५ किलोमीटर का विहार कर मंगरोप के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में पधारे।

अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने विदाई के क्षणों में भीलवाड़ावासियों को अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि अर्हत् वाङ्मय में कहा गया है—आदमी प्रसन्न रहना चाह सकता है। कौन आदमी प्रसन्न नहीं रहना चाहता? प्रसन्न रहने के लिए जो प्रयास या स्थिति होनी चाहिए वो होती है, तो प्रसन्नता की प्राप्ति हो सकती है। शास्त्रकार ने तो कहा है कि अपने आपको विशेष प्रसन्न करो।

प्रसन्न के दो अर्थ हो सकते हैं—पहला जैसे खुश-हर्षित रहना। दूसरा अर्थ है—स्वच्छ निर्मल। अच्छा स्वच्छ होना प्रसन्न होना है। जैसे आकाश स्वच्छ है। चित्त निर्मल, दुःख रहित रहे, शांति रहे, समता रहे। विशेष प्रसन्नता पाने के लिए शास्त्र में एक उपाय बताया गया है—समता की साधना करो, समता में रहो। प्रेक्षा, अनुप्रेक्षा, अभ्यास करो। समता धर्म है। साधु को तो समतावान होना चाहिए।

आगम में कहा गया है कि ऋषि होते हैं, वे महान प्रसाद वाले हैं। प्रसाद-प्रसन्नता एक ही है। वे द्वंद्वात्मक स्थितियों में सम रहते हैं। चाहे लाभ-अलाभ, जीवन-मरण, निंदा-प्रशंसा, मान-सम्मान हो या अपमान हो ऐसी स्थितियाँ द्वंद्वात्मक स्थितियों में आदमी समता रखने का प्रयास करे। शांति-समता रखना प्रसन्नता का एक महत्त्वपूर्ण सूत्र बन सकता है। यह एक प्रसंग से समझाया कि गाली देने से या गंदा खाने-पीने से मुँह खराब हो सकता है।

मीठा बोलने से सुख मिलता है। न बुरा देखो, न बुरा बोलो, न बुरा कहो। थोड़ा ध्यान दे लें तो हमारी भाषा मधुर हो सकती है। वाणी में अमृत होता है, तो विष भी हो सकता है। पर जहर का उपयोग क्यों करें। प्रोटोकोल के जो लायक है, उनका ध्यान रखें। कोई कुछ भी बोले हमें गुस्सा नहीं करना चाहिए। किसी को दुःख देना अच्छी बात नहीं है। किसी को चित्त-समाधि देना अच्छी बात है।

क्षमा देना अच्छी बात है। शक्ति है, तो अच्छे काम में लगाएँ। शक्ति का उपयोग का विवेक हो। विद्या दुर्जन के पास है, वह विद्या से विवाद कर लेता है। सज्जन के पास विद्या है तो वह विद्या से ज्ञान का दान करेगा। दुर्जन धन का अहंकार करता है। सज्जन धन का उपयोग दान में करता है। दुर्जन के पास शक्ति है, तो दूसरों को प्रताड़ित करेगा। सज्जन के पास शक्ति है, तो वह दूसरों की सेवा करता है, रक्षा करता है। दुर्जन और सज्जन में कितना बड़ा अंतर होता है।

गिरे हुए आदमी पर हँसो मत, उसे सहारा देकर उठाने का प्रयास करो। गृहस्थ जीवन में भी आदमी को दुर्जनता से बचना चाहिए। दुरात्मा न बनें, सदात्मा, महात्मा बनने का प्रयास करें। प्रयास हो कि हम परमात्मा भी बनें।

हम अहिंसा यात्रा कर रहे हैं। चतुर्मास भीलवाड़ा में किया आज संपन्न हो गया। हमने वहाँ से प्रस्थान कर दिया, यात्रा शुरू हो गई है। अहिंसा यात्रा के तीन उद्देश्यों को समझाया। सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति है, तो गृहस्थ आदमी सज्जनता में है। स्थानीय लोगों को अहिंसा यात्रा के संकल्प स्वीकार करवाए। स्थानीय जैन समाज में भी धार्मिकता की भावना बनी रहे।

स्थानीय सरपंच भगवान गुर्जर ने पूज्यप्रवर का अपने गाँव में स्वागत किया। जैन समाज की ओर से सुरेश सुराना ने पूज्यप्रवर की अभिवंदना की। कुलदीप चिंडालिया, विमला जायसवाल, प्रताप चंडालिया, राघव सोमानी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। मूलचंद नाहर ने भी अपनी भावना श्रीचरणों में अर्ज की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

मेवाड़ धरा भीलवाड़ा की भूमि...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

साधु-साध्वियों ने लेख पत्र का वाचन किया। बहिर्विहारी साधुओं के लिए मंगलकामना प्रेषित करवाई। उदयपुर राजकुमार लक्षराजसिंह मेवाड़ को प्रेरणा प्रदान करवाई।

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी ने मंगलभावना समारोह पर कहा कि लगभग चार महीने पूर्व पूज्यप्रवर का चतुर्मास की दृष्टि पदार्पण हुआ। प्रायः मेवाड़ के सभी लोगों में बड़ा उत्साह था। उमंग और आकर्षण था। अनेक क्षेत्रों के लोगों को पूज्यप्रवर का प्रवचन सुनने का लाभ मिला। तेरापंथ के आचार्यों के सामने कितने काम आते हैं, उन सबका संपादन करते हैं। एक प्रसंग से समझाया कि साधुओं की संगत करने से चंदन जैसी सुगंध की तरह जीवन सुवासित होता है।

गुरुदेव की देशना तो गंगा की तरह अमृत की धारा है, संजीवनी है। इससे लोगों के जीवन में रूपांतरण हुआ है और होता रहेगा। गुरुदेव ने इस चतुर्मास में कितने साधु-साध्वियों को ज्ञान प्रदान करवाया। कितनों को उपासना का अवसर मिला। पूज्यप्रवर ने सभी को ऊर्जा प्रदान की है। यहाँ के कार्यकर्ता-श्रावकों ने भी अच्छी सेवा की है। अन्य समाज के हजारों लोगों को भी पूज्यप्रवर के प्रवचन श्रवण का लाभ मिला है।

मुख्य नियोजिका जी ने, साध्वीवर्या जी एवं मुख्य मुनिप्रवर ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की।

राहुल कुमार जैन ने आत्म संतुष्ट के गुण 'The Vertual of self satisfied life' पुस्तक का लोकार्पण पूज्यप्रवर के चरणों में किया। उन्होंने इस संदर्भ में अपनी भावना रखी। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन इस संदर्भ में फरमाया।

महाराज कुमार लक्षराजसिंह, सुशील आच्छा, गणपत पितलिया, प्रकाश कर्णावट, दिनेश खांटेड़, चमणमल सुराणा, अभिषेक कोठारी, गुलाबचंद बोथरा ने अपनी मंगलभावना अभिव्यक्त की। तेरापंथ महिला मंडल ने गीत की प्रस्तुति दी। महाराज कुमार लक्षराज सिंह मेवाड़ पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ पधारे, उन्होंने अपनी भावना रखी। लिंगायतस्वामी श्रीदयानंदजी ने लिखित भावना पूज्यप्रवर को निवेदन की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

जीवन विज्ञान से विद्यार्थी का मानसिक...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

हमारे भीतर असद् और सद् इन दोनों का अस्तित्व है। हमारा प्रयास यह होना चाहिए, हम असद् से सद् की ओर आगे बढ़ें। असंयम को छोड़ संयम को स्वीकार करें। अज्ञान को छोड़ ज्ञान को और मिथ्यात्व को छोड़ सम्यक्त्व को स्वीकार करें। अबोधि को छोड़ बोधि को स्वीकार करें।

आज कार्तिक शुक्ला त्रयोदशी, जीवन-विज्ञान दिवस है। जीवन-विज्ञान आचार्य श्री तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी की विशेष देन है। आचार्य भिक्षु की जन्म और देवलोक की मासिक तिथि है। भगवान महावीर की भी मासिक जन्मतिथि है। भगवान महवीर और आचार्य भिक्षु में कई नैसर्गिक समानताएँ हैं। जन्मतिथि, शादी और संतान में समानता है।

आज ही के दिन आचार्यश्री तुलसी ने मुनि नथमलजी टमकोर को महाप्रज्ञ अलंकरण प्रदान किया था। बाद में महाप्रज्ञ नाम दिया गया था। महाप्रज्ञ आगमिक शब्द है। आचार्य महाप्रज्ञ जी तो महान प्रज्ञा के धनी और विद्वान थे। जीवन-विज्ञान जीने का विज्ञान है। शिक्षा जगत के लिए खासकर यह जीवन-विज्ञान है। विद्या संस्थाओं में विद्यार्थी ज्ञान प्राप्त करते हैं। शिक्षक ज्ञान देते हैं। शिक्षक, विद्यार्थी और अभिभावक व शिक्षण संस्थाओं के संचालन का ये योग है।

माता-पिता के मन में कोई उम्मीद होती है। वे अपने बच्चों को शिक्षण संस्थाओं में इसलिए भेजते हैं कि हमारा बच्चा ज्ञानवान बने, आत्मनिर्भर बने और संस्कारी बने। ये तीनों उम्मीदें विद्या संस्थानों द्वारा पूरी की जाती हैं, तो अभिभावक संतुष्ट हो सकते हैं। जीवन-विज्ञान बताता है कि विद्यार्थी के शारीरिक, बौद्धिक विकास के साथ मानसिक और भावनात्मक विकास भी हो। मानसिक और भावनात्मक विकास विद्यार्थी में हो यह जीवन-विज्ञान का लक्ष्य है।

विद्यार्थी में नैतिकता, नम्रता के संस्कार आएँ इसके लिए जीवन-विज्ञान अच्छा माध्यम बन सकता है। बालक और पालक आगे बढ़े तो यह जीवन-विज्ञान दिवस एक प्रेरणा देने वाला बन सकता है। जीवन-विज्ञान का उपयोग हो, विद्यार्थी आगे बढ़े, यह मंगलकामना।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि गौतम बुद्ध प्रवचन करते थे। प्रवचन से परिवर्तन हो सकता है। महान पुरुषों का सान्निध्य जीवन बदलने वाला होता है। प्रवचनकार जैसा कहता है, वैसा ही उसका आचरण होना चाहिए, तभी वह प्रभावी बन सकता है।

जीवन-विज्ञान के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि मनन कुमार जी ने जीवन-विज्ञान के बारे में समझाया।

अहिंसा रूपी धर्म को अपनी जीवनशैली में उतारें : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, १६ नवंबर, २०२१

मेवाड़ का एक नगर पुर, जहाँ हमारे आद्य-प्रवर्तक आचार्य भिक्षु के चतुर्मास हुए हैं। आज इसी नगर में प्रातः तेरापंथ के वर्तमान भिक्षु आचार्यश्री महाश्रमण जी पधारे। परम पावन के पधारने से पुर का कण-कण पुलकित होकर स्वयं अपने आपको धन्य महसूस कर रहा था।

तेरापंथ के एकादशम अधिशास्ता ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि अर्हत वाङ्मय में कहा गया है–शास्त्र में कहा गया है–पहले ज्ञान और फिर दया-आचरण। अज्ञानी जिसके पास ज्ञान ही नहीं है, वह क्या कर पाएगा, कैसे जान पाएगा कि क्या उसके लिए श्रेय है और क्या पाप होता है। ज्ञान हो, ज्ञान के साथ आचार भी अच्छा हो जाए तो आदमी कल्याण की दिशा में आगे बढ़ सकता है।

कोरा ज्ञान है, साथ में आचार है ही नहीं, वीतरागता आई ही नहीं। कोरा ज्ञान मोक्ष मिलाने वाला नहीं। कोरा ज्ञान होगा तो पूरा ज्ञान हो भी नहीं सकता। केवल ज्ञान तो हो ही नहीं सकता जब तक समता-वीतरागता नहीं आ जाती।

अहिंसा एक आचार है, पर अहिंसा को जान ले आदमी तो अहिंसा का पालन सम्यक्तया हो सकता है। जो हिंसा-अहिंसा और धर्म-कर्म को नहीं

जानता वह समता, महाव्रतों और व्रत का पालन और सम्यक् आचार का पालन कितना कर पाएगा। अहिंसा एक धर्म है, जीवनशैली की पद्धति बन सकती है, अहिंसा एक नीति भी बन सकती है। अहिंसा को तो एक परम धर्म कहा गया है।

साधु के लिए तो अहिंसा का पालन एक महाव्रत के रूप में सूक्ष्मता के साथ करना अपेक्षित होता है। गृहस्थ भी अहिंसा का पालन अपनी स्थिति अनुसार करें। जीवन जीने का तरीका अहिंसा युक्त हो। हर क्रिया में हिंसा से बचाव हो। व्यवहार में भी अहिंसा हो। राष्ट्र की नीति या समाज की नीति अहिंसा हो, मैत्रीपूर्ण व्यवहार हो।

भारत एक लोकतांत्रिक देश है। विधान और व्यवस्था में अहिंसा हो। न्याय में अहिंसा हो। किसी के साथ अन्याय न हो। समान और परिवार की नीति में ही अहिंसा हो। बच्चों में भी अहिंसा का भाव रहे। अहिंसा के कई प्रकार हैं। गृहस्थ के आवश्यक कार्यों में तो हिंसा संभव है, पर अनावश्यक हिंसा न हो। प्रतिरक्षात्मक हिंसा भी हो सकती है। संकल्पपूर्वक किसी की हिंसा न हो। साधु की तुलना तो गृहस्थ कैसे करे। गृहस्थ सोचता है–धन्य है, मुनिवर महाव्रत पालते हैं सदा।

गृहस्थ लोभ-गुस्से में आकर संकल्पजा हिंसा न करे। आचार्य भिक्षु ने अहिंसा-दया की अनेक बातें बताई हैं। कटु जबान न बोलें। गुस्सा करना खुद की हार है। समता-क्षमा रखना उपहार है। प्रेक्षाध्यान में भी प्रियता-अप्रियता की अनुप्रेक्षा कराते हैं। पारस दुगड़ सामने बैठे हैं। प्रेक्षाध्यान का अच्छा कार्य करते हैं। हमारे जीवनशैली में अहिंसा जुड़ी रहे, यह अपेक्षित है।

पूज्यप्रवर ने सम्यक् दीक्षा ग्रहण करवाई है।

पुर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष सुरेशचंद्र सिंघवी, ज्ञानशाला ज्ञानार्थी, तेयुप अध्यक्ष नीतिन हिंगड़, महिला मंडल से राजतिलक खाब्या, तेरापंथ महिला मंडल, कन्या मंडल, देवीलाल बेरूआ, ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं ने प्रस्तुति से पूज्यप्रवर की अभिवंदना की। इसके अलावा कर्णावट सिस्टर्स, सोनिया भारद्वाज, दिव्या बोल्या, प्रतीक्षा नेनावटी ने भी भावाभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

पाठकीय अभिमत

नये क्लेवर का तेरापंथ टाइम्स - मनमोहक

✦ अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स नये क्लेवर के साथ अंक-६ प्राप्त हुआ। इन सप्ताह में तेरापंथ टाइम्स का क्लेवर आकर्षक व मनमोहक लगा। 'अहिंसा यात्रा' भीलवाड़ा चातुर्मास के बाद गतिमान हुई। भीलवाड़ा का ऐतिहासिक चातुर्मास उसकी झलकियाँ तेरापंथ टाइम्स में पढ़कर आनंदित हुआ। 'अणुव्रत दिवस' समण श्रेणी का उद्भव नजारा सामने आ गया। महाश्रमण जी का दोनों हाथों से उठा वरदहस्त आशीर्वाद दे रहा आनंददायक रहा।

संपादक दिनेश मरोठी की सूझ-बूझ, परिश्रम सराहनीय है। दिनेश शर्मा जो वर्षों से कार्यालय में तेरापंथ टाइम्स का कार्य देख रहे हैं। उनका श्रम बोल रहा है। और व्यापक बने, घर-घर पहुँचे, जिससे परिवार व बच्चों में संस्कार बने रहें।

अंदर के पृष्ठों में 'आत्मा के आसपास', संबोधि, उपासना, अवबोध पठनीय, प्रेरक मननीय लगा। साँसों का इकतारा प्रतियोगिता में आवश्यक है प्रेरणा देगा।

अन्य स्थानों की संक्षिप्त रिपोर्ट, जैन संस्कार के बढ़ते चरण जैनत्व बढ़ रहा है, प्रेरणा मिलती है।

ताजी जानकारी धर्मसंघ का प्रमुख पत्र 'तेरापंथ टाइम्स'' घर-घर पहुँचे, पठनीय सामग्री और दें। शुभांषा-शुभकामना, मंगलकामना। नए अध्यक्ष पंकज डागा अनुभवी हैं, और प्रगति होगी।

–इंदरचंद बैद 'कवि'
नोखा, (राज०)

✦ *ज्ञान किसी माध्यम से हो, किंतु ज्ञान होने के बाद कल्याण को स्वीकार करने और पाप को छोड़ने का प्रयास करना चाहिए।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

आदमी जैसा करता है वैसा फल पाता है : आचार्यश्री महाश्रमण

आमागाँव, २१ नवंबर, २०२१

जन-जन का कल्याण करने को संकल्पित परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण जी मंगरोल से लगभग १३ किमी का विहार कर आमागाँव पधारे। मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए पूज्यप्रवर ने फरमाया कि जैसी करणी-वैसी भरणी, सुख-दुःख स्वयं मिलेगा। आदमी-प्राणी जैसा करता है, वैसा फल पाता है। जैसा बोता है, वैसी फसल काटता है। अच्छा करने वाला अच्छा फल प्राप्त करता है और बुरा करने वाला बुरा फल प्राप्त करता है। यह एक प्रसंग से समझाया कि भले का भला, बुरे का बुरा।

पाप करने वाले का नुकसान हो सकता है और भला करने वाला कुछ प्राप्त कर सकता है। हमारे जीवन में जैसी करणी, वैसी भरणी, हमें बुरे कार्मों से बचना चाहिए। धर्म के रास्ते पर, सन्मार्ग पर चलने का प्रयास करना चाहिए।

आचार्यप्रवर ने ग्रामिणों को फरमाया कि हम लोग अभी अहिंसा यात्रा कर रहे हैं। अहिंसा यात्रा के तीन उद्देश्यों को विस्तार से समझाया एवं स्थानीय लोगों को अहिंसा यात्रा के संकल्प स्वीकार करवाए। जैन समाज के ५ परिवार हैं।

पूज्यप्रवर के स्वागत में बड़लियास ठाकुर राज परिवार से ठाकुर दिलीप सिंह ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। राघव सोमानी, विशाल (राजकीय विद्यालय परिवार से) ने भी पूज्यप्रवर का स्वागत किया। जैन परिवार की ओर से विनोद चिंडालिया ने अपनी भावना रखी। मुकेश रांका ने भी अपनी भावना रखी।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि जो गुरु चरणों में रहते हैं, वे स्वयं में अपने आपको धन्य मानते हैं।

भवसागर को तरने की नौका है - तपस्या

साहुकारपेट, चेन्नई।

साध्वी अणिमाश्री जी ने के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में मनोजदेवी-सुंदरलाल भूरा के मासखमण तप का अभिनंदन कार्यक्रम आयोजित हुआ।

साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि अंतर्मुखी चेतना का जागरण करती है–तपस्या। तपस्या जिनशासन का प्राण तत्त्व है। तपस्या से जिनशासन की नीवें गहरी होती हैं।

मनोज भूरा वो तपस्विनी है, जिसने कार्तिक मास में मासखमण कर अपने जीवन को तप से ज्योतिर्मय बनाया है। इस चातुर्मास का यह दसवाँ मासखमण, दसों दिशाओं को उल्लसित कर रहा है। मनोज भूरा ने मजबूत संकल्पबल, सुदृढ़ मनोबल, चारित्रात्माओं की प्रेरक ऊर्जा और पारिवारिकजनों के सहयोग से अपनी लक्षित मंजिल का वरण किया है। तप के क्षेत्र में आगे बढ़ती रहना, मंगलकामना।

साध्वीवृंद ने भावपूर्ण गीत द्वारा तप की अनुमोदना की एवं परिषद को तप करने के लिए प्रेरित किया। तेरापंथी सभा ट्रस्ट के प्रबंध न्यासी विमल चिप्पड़ ने साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी से प्राप्त संदेश का वाचन किया। तेरापंथ सभा संगठन मंत्री राजेंद्र भंडारी ने संचालन किया। महिला मंडल ने सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की। खुशबू, मुकेश, अभिषेक, प्रियल ने गीत का संगान किया। पौत्री महक, पुत्रवधू खुशबू ने विचार व्यक्त किएं तेरापंथ सभा की ओर से तपस्विनी बहन का सम्मान किया गया।

इको फ्रेंडली दीपावली

अहमदाबाद।

अणुव्रत समिति द्वारा शासनश्री साध्वी सरस्वती जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, शाहीबाग में 'इको फ्रेंडली दीपावली मनाएँ' विषय पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। शासनश्री साध्वी सरस्वती जी ने कहा कि दीपावली केअवसर पर सभी अपनी आत्मा के ज्ञान का दीप जलाकर अपने जीवन में ज्यादा-से-ज्यादा भगवान की स्तुति करें और अपने भीतर के अंधकार को मिटाकर अपनी आत्मा को प्रकाशित करें। साध्वी सरस्वती जी ने उपस्थित सदस्यों को आतिशबाजी नहीं करने, पटाखे नहीं फोड़ने का संकल्प भी करवाया।

अणुव्रत समिति अध्यक्ष सुरेश बागरेचा ने रोशनी का त्योहार दीपावली पर पर्यावरण संरक्षण के लिए इको फ्रेंडली दीपावली मनाने के लिए जागृत किया। आतिशबाजी नहीं करने के लिए अणुव्रत विश्व भारती द्वारा ऑनलाइन संकल्प पत्र भरकर संकल्पित होने के लिए सभी को आह्वान किया।

महिला मंडल के विविध आयोजन

रूपांतरण एक्सप्रेस कार्यशाला का आयोजन

चुरू।

साध्वी मंगलप्रभा जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में अभातेमम द्वारा निर्देशित 'रूपांतरण एक्सप्रेस' कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसका पहला पड़ाव है 'श्री' जिसे प्राप्त करने में हमारा सहायक बनता है–अनेकांतवाद। कार्यक्रम की शुरुआत महिला मंडल की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत के संगान से हुई। महिला मंडल अध्यक्षा मुन्नी देवी कोठारी ने सभी का स्वागत किया तथा अनेकांतवाद पर अपने विचार रखे।

साध्वी प्रणवप्रभा जी ने सम्यक् दृष्टिकोण के साथ अनेकांत को कैसे अपने जीवन में उतारा जाए इस विषय पर अपना वक्तव्य दिया। साध्वी मंगलप्रभा जी ने अनेकांतवाद के सिद्धांत को विविध उदाहरण के माध्यम से समझाया।

कार्यशाला में बहनों एवं कन्याओं की अच्छी उपस्थिति रही। कार्यशाला का संचालन सहमंत्री अनू बांठिया ने किया। इस अवसर पर महिला मंडल द्वारा संवत्सरी महापर्व पर १० वर्ष से छोटी उम्र के बच्चों द्वारा उपवास करने पर उनको भी सम्मानित किया गया। कन्या मंडल द्वारा नमस्कार महामंत्र पोस्टर प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें प्रथम स्थान निधि बांठिया, द्वितीय स्थान आयुषी कोठारी ने प्राप्त किया। महिला मंडल द्वारा इन्हें भी सम्मानित किया गया।

दीपक व रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन

विजयनगर।

तेरापंथ सभा भवन में साध्वी प्रमिला कुमारी जी के सान्निध्य में महिला मंडल द्वारा आयोजित इको फ्रेंडली दीपावली पर कार्यशाला और उसके साथ ही रंगोली, दीपक और बंदरवार की प्रतियोगिता रखी गई थी। जिसमें ६० से अधिक महिलाओं व कन्याओं ने प्रतियोगिता में उत्साहपूर्वक भाग लिया। एवं १५० से अधिक की उपस्थिति रही। साध्वीश्री जी ने कहा कि जीवन बहुमूल्य है और जैसे हमें अपना जीवन प्रिय है वैसे ही सभी प्राणियों को अपना जीवन प्रिय होता है। अहिंसा को अपनाकर कैसे हम बिना पटाखे के दिवाली मना सकते हैं।

अध्यक्ष प्रेम बाई भंसाली ने उपस्थित लोगों का स्वागत किया।

अभातेमम की पूर्व महामंत्री एवं कार्यकारिणी सदस्य वीना बैद ने अपने भाव व्यक्त किए। महिला मंडल रंगोली प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार कविता बाफना, द्वितीय स्थान नेहा दक, कन्या मंडल में प्रथम पुरस्कार खुशी गांधी, द्वितीय स्थान प्रेरणा श्रीमाल को मिला। दीपक प्रतियोगिता में महिला मंडल में प्रथम नेहा दक, द्वितीय ममता नाहटा, कन्या मंडल में प्रथम प्रिय बाबेल, द्वितीय प्रेक्षा टेबा एवं बंदरवार प्रतियोगिता में महिला मंडल में प्रथम स्थान नेहा दक, द्वितीय स्थान सीमा टेबा व कन्या मंडल में प्रथम स्थान खुशी मांडोत व द्वितीय स्थान दीक्षिता हिरण को प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम में उपाध्यक्ष महिला पटावरी, मंजु गादिया, मंत्री सुमित्रा बरड़िया, सहमंत्री अंजु सेठिया, सुनीता भटेवरा, कोषाध्यक्ष मंजु भंसाली, प्रचार-प्रसार मंत्री किरण बोराणा, ललिता डागा आदि सभी की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन दीक्षिता व आशा कोठारी ने किया। बबिता दस्सानी आभार ज्ञापन किया।

अनेकांतवाद कार्यशाला

हैदराबाद।

अभातेमम के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल, हैदराबाद के तत्त्वावधान में तेरापंथ भवन, डी०वी० कॉलोनी में शासनश्री साध्वी जिनरेखा जी आदि के सान्निध्य में 'अनेकांतवाद' विषय पर कार्यशाला आयोजित की गई।

मासिक कार्यशाला की शृंखला में इस वर्ष धर्म के सूत्रों को अपनाकर जीवन में रूपांतरण लाने का प्रयास किया गया। जीवन को खुश रखने का एक आध्यात्मिक सिद्धांत है–अनेकांत। अनेकांत का सूत्र जीवन में उतारकर जीवन को सरल एवं निरामय बनाया जा सकता है। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। मंगलाचरण की सुमधुर प्रस्तुति महिला मंडल द्वारा की गई। साध्वी मार्दवयशा जी ने मंगलभावना का संगान एवं प्रेक्षाध्यान का लघु उपयोग करवाया।

साध्वी जिनरेखा जी ने कहा कि जैन जीवनशैली का दूसरा आयाम है–अनेकांतवाद। मनुष्य सामुदायिक जीवन जीता है। उसके सापेक्षता, समन्वय, सहिष्णुता, शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व आदि आवश्यक होते हैं। निरपेक्ष या एकांगी दृष्टिकोण से आग्रह पैदा होता है, आग्रह का परिणाम है–कलह। कलह से बचने का उपाय है–अनेकांत। अनेकांत जैन दर्शन का मौलिक सिद्धांत है।

साध्वीश्रीजी द्वारा गीत का संगान किया गया। महिला मंडल अध्यक्ष अनीता गिड़िया ने सभी का स्वागत किया और अनेकांत दर्शन पर विचार व्यक्त किए। पूर्व अध्यक्ष प्रेम पारख, मंजु दुगड़, चंदा जैन, शकुंतला बुच्चा, शीतल सांखला, हर्षलता दुधोड़िया, चाँद बैद, जतन ओस्तवाल, प्रभा दुगड़, संतोष पींचा, रजनी शामसुखा, निशा दुगड़ आदि अनेक महिला मंडल की बहनों की उपस्थिति रही। सभी का आभार ज्ञापन मंत्री श्वेता सेठिया ने किया।

कर्नाटक राज्योत्सव

राजराजेश्वरी नगर।

तेमम द्वारा ६६वाँ कर्नाटक राज्योत्सव के उपलक्ष में समृद्ध राष्ट्र योजना के तहत मागडी रोड स्थित गवर्नमेंट स्कूल में वृक्षारोपण किया गया। जहाँ पर ३५० लड़कियाँ एवं १०० के लगभग लड़के शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। अध्यक्षा लता बाफना ने बेटी बचाओं-बेटी पढ़ाओ के महत्त्व को बताते हुए मंडल की ओर से चल रही गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। डॉक्टर प्रकाश जैन, स्कूल के प्रिंसिपल एवं अध्यापकों ने मंडल की इस गतिविधि के लिए सराहना की। कार्यक्रम के समायोजन में मंत्री सीमा छाजेड़ का श्रम रहा। केम्परमेह, मथरु भास्कर, भावना, राघवेंद्र आदि स्कूल के पदाधिकारी का पूर्ण सहयोग रहा। समाजसेवी संगीता मेहता, सुमन पटावरी, मंजु बोथरा, दीपाली गोलछा, उषा कोठारी उपस्थित थी।

'एक कदम प्रगति की ओर' कन्या सम्मेलन

मदुरै।

स्थानीय तेरापंथ भवन में मुनि अर्हत कुमार जी के सान्निध्य में 'एक कदम प्रगति की ओर' कन्या सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत अमिजरा कन्या मंडल ने की। तेमम की अध्यक्षा नयना पारख ने सभी का स्वागत किया। मुनि अर्हत कुमार जी ने कहा कि जीवन में प्रगति की अहम भूमिका होती है। एक कदम प्रगति की ओर बढ़ने से पहले हमें समझना है, जीवन क्या है? जीवन एक उत्सव है, जीवन आनंद का मानसरोवर है। सूर्योदय के समय सूर्य की स्वर्णिम अरुणिमा जीवन है। जीवन में प्रगति बहुत जरूरी है।

मुनि भरत कुमार जी ने कविता के माध्यम से कहा–जिसकी सोच होती है पॉजिटिव वह नहीं बनता एग्रेसिव, वह हर समय रहता है एक्टिव, उससे कभी कोई काम न होगा डिफेक्टिव, उसकी बन जाएगी इमेज अट्रेक्टिव।

बाल संत मुनि जयदीप कुमार जी ने कहा कि हारने पर हार न मानना, सफलता का सूचक मंत्र है। हम अपने मन में उम्मीदों को जिंदा रखें और अपने हौसलों को आगे बढ़ाएँ। ईरोड से पधारे कार्यक्रम के मुख्य स्पीकर बीजेएस स्टेट प्रेसिडेंट एंड स्मार्ट गर्ल ट्रेनर रमेश पटावरी ने सभी कन्याओं को मैजिक मंत्रों एवं एक्टिविटीज के द्वारा बताया जो सीख रहा है वह प्रगति कर रहा है और कुछ टिप्स दिए जिससे वह अपने जीवन को प्रगति की ओर ले जा सकेंगे। तेरापंथ कन्या मंडल ने रोचक प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में ६० कन्याओं ने भाग लिया। महासभा प्रभारी किशनलाल डागा, बीजेएस से मुकेश जैन कोइल्लपट्टी व अरुण तांतिया तूतीकोरीन की गरिमामय उपस्थिति रही। धन्यवाद ज्ञापन कन्या मंडल संयोजिका खुशबू दुगड़ ने किया। कार्यक्रम का संचालन तेमम मंत्री दीपिका फूलफगर ने किया।

कार्यक्रम में तेमम, तेरापंथ सभा एवं तेयुप के पदाधिकारियों का पूर्ण सहयोग रहा।

रेजिन आर्ट वर्कशॉप

कोयंबटूर।

तेमम के अंतर्गत तेरापंथ कन्या मंडल द्वारा रेजिन आर्ट वर्कशॉप का आयोजन किया गया। कन्या मंडल की कन्या प्रेक्षा बोकड़िया ने सभी को रेजिन आर्ट से Tray & Coaster का सेट सिखाया। कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण से महिमा बोथरा ने की। स्वागत संदेश दिशा बुच्चा ने दिया।

महिला मंडल अध्यक्ष मंजु गीड़िया ने सभी को मंगल उद्बोधन दिया। सीमा बोकड़िया ने नमस्कार महामंत्र का अर्थ बताया। इस कार्यक्रम में ३० कन्याएँ एवं १० महिलाओं की सहभागिता रही। धन्यवाद ज्ञापन रिद्धि पुगलिया ने किया।

परचम केसरिया शक्ति का

विजयनगर।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में तेमम, विजयनगर के अंतर्गत 'परचम केसरिया शक्ति का' कैसे बने संस्था की सजग प्रहरी विषय पर वृहद कार्यशाला का आयोजन किया गया।

साध्वी प्रमिला कुमारी जी ने कहा कि जो व्यक्ति सहज जीवन जीता है वह ऊँचाइयों को छू लेता है। जीवन में दो मुख्य रंग हैं–केसरिया शक्ति और पौरुष का सूचक और सफेद रंग शांति का सूचक है। तेरापंथ धर्मसंघ क्षमता, ममता एवं करुणा का संगम है। नारी हर क्षेत्र में अपना दायित्व आज संभाल रही हैं, इसलिए नारी शक्ति का विकास बहुत जरूरी है नारी हर क्षेत्र में आगे बढ़े और सजग प्रहरी बन सजगता से कार्य करें।

राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम सेठिया ने परचम शब्द की व्याख्या करते हुए कहा कि प–अपने आपकी क्वालिटी को पहले पहचानें। र–उस राह को चुनें जिसमें आप सक्षम हैं। च–चहुँमुखी बनें। म–मोड़ने का प्रयास करें, सकारात्मक रहें।

तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष प्रेम भंसाली ने कार्यक्रम के प्रारंभ में सभी का स्वागत किया एवं भावना चौका में सहयोग की जानकारी दी।

साध्वी आस्थाश्री जी ने विषय प्रतिपादन प्रस्तुत करते हुए कहा कि संस्था के प्रति अपना दायित्व कर्तव्य निर्वहन करें, मधुर व्यवहार विश्वास के परिचय बनें। मैं और मेरा की जगह हम शब्द का प्रयोग करें। राष्ट्रीय महामंत्री मधु देरासरिया ने अपने वक्तव्य में संघ एवं संघपति के प्रति पूर्ण निष्ठावान बने रहने की प्रेरणा दी।

कार्यशाला में पूर्व महामंत्री वीणा बैद, कर्नाटक प्रभारी मधु कटारिया, सभाध्यक्ष राजेश चावत, तेयुप अध्यक्ष अमित दक, कन्या मंडल संयोजिका खुशी गांधी ने अपने विचार रखे।

कार्यक्रम में प्रतिभा पुरस्कार से सम्मानित सोनल पीपाड़ा का सम्मान किया गया और समर्पिता का गायन किया। मंत्री सुमित्रा बरड़िया एवं कार्यकारिणी सदस्य आशा कोठारी ने संस्था की गतिविधियों का चित्रात्मक रूप प्रस्तुत किया।

इस कार्यशाला में तेरापंथ टाइम्स के संपादक दिनेश मरोठी, अर्हम भवन मंत्री उम्मेद नाहटा, महिला मंडल पदाधिकारियों, कार्यसमिति सदस्यों सहित अच्छी संख्या में उपस्थित रही। कार्यशाला में सभी बहनों का विशेष श्रम रहा। कार्यशाला का संचालन उपाध्यक्ष महिमा पटावरी ने किया।

अभातेयुप योगक्षेम योजना

योगक्षेम

सत्र 2021-23

❋ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
❋ श्री अशोक श्रेयांस बरमेचा, तारानगर-हैदराबाद	11,00,000
❋ श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
❋ श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
❋ श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई	5,00,000
❋ श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
❋ श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
❋ श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
❋ श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
❋ श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000

जीवन-विज्ञान, नशामुक्ति व पर्यावरण पर प्रतियोगिताएँ

हैदराबाद।

अणुव्रत समिति, हैदराबाद द्वारा विगत दिनों राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, बालोतरा में साध्वी काव्यलता जी के सान्निध्य में व समिति की जीवन-विज्ञान संयोजिका रीटा सुराणा एवं महिला मंडल अध्यक्षा अनिता गिड़िया द्वारा विद्यार्थियों को जीवन-विज्ञान के प्रत्यक्ष प्रयोगों के साथ विद्यार्थियों के लिए पर्यावरण सुरक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाने हेतु चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

अणुव्रत समिति के अध्यक्ष प्रकाश एच० भंडारी ने अपने वक्तव्य में पदाधिकारियों व विद्यालय से पधारे प्रधानाचार्य शिव कुमार, संजीव राव व विद्यार्थियों का स्वागत किया। इस अवसर पर गवर्नमेंट हाई स्कूल, बालोतरा के विजेता विद्यार्थियों को चित्रकला प्रतियोगिता के लिए समिति के उपाध्यक्ष अनिल कातरेला के सौजन्य से पुरस्कृत किया गया।

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अंतर्गत हिंसा, नशामुक्ति व पर्यावरण सुरक्षा को व्यापक प्रचारित-प्रसारित करने के लिए विभिन्न आयु वर्गों के लिए अखिल भारतीय स्तर पर ऑनलाइल चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में ६१ प्रतियोगियों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता को आयोजित करने में संयोजक रीटा सुराणा, अनिता गीडिया, नीरज सुराणा, विजय आंचलिया व अनिल कातरेला का विशेष सहयोग रहा। तीनों प्रतियोगिताओं में दो-दो आयु वर्गों का निर्धारण कर सभी विजेता प्रतियोगियों को नीरज जयसिंह सुराणा, हैदराबाद के सौजन्य से प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं सभी संभागियों को सांत्वना पुरस्कार के रूप मे नकद पुरस्कार राशि प्रदान की गई। इस प्रतियोगिता के पुरस्कृत विजेता प्रतियोगियों के चयन के लिए प्रख्यात चित्रकार पी० श्रीनिवास की सेवाएँ ली गई।

अणुव्रत समिति के अध्यक्ष प्रकाश एच० भंडारी ने शासनश्री साध्वी जिनरेखा जी, साध्वी निर्वाणश्री जी, साध्वी मधुस्मिता जी, साध्वी काव्यलता जी के प्रति कृतज्ञता के भाव प्रदर्शित करते हुए सभी संयोजकगण पुरस्कार सौजन्य प्रदाता व सभी सदस्यों के प्रति आभार ज्ञापित किया।

मंगलभावना समारोह का आयोजन

जसोल।

मुनि धर्मेश कुमार जी के सान्निध्य में बहन वीनू संखलेचा के पारमार्थिक शिक्षण संस्थान, लाडनूं में प्रवेश हेतु मंगलभावना समारोह का कार्यक्रम आयोजित हुआ। मुनि धर्मेश कुमार जी ने कहा कि वर्तमान के संसार की भौतिकवादी सुख-सुविधा छोड़कर संयम पथ पर अग्रसर होने जा रही बहन वीनू संखलेचा के लिए बड़े ही गौरव की बात है। तेरापंथ धर्मसंघ में एक ओर अध्याय जुड़ जाएगा एवं जसोल से एक बहन का पारमार्थिक शिक्षण संस्था, लाडनूं में प्रवेश होने से जसोल का नाम स्वर्ण अक्षरों में जुड़ जाएगा।

मुनि डॉ० विनोद कुमार जी, मुनि यशवंत कुमार जी ने बहन के प्रति मंगलभावना व्यक्त की।

कार्यक्रम का शुभारंभ दिव्या बोकड़िया के मंगलाचरण से हुआ। तेरापंथ महिला मंडल, कन्या मंडल एवं संखलेचा परिवार द्वारा स्वागत गीतिका का संगान किया गया। इस अवसर पर शंकरलाल ढेलड़िया, गौतमचंद सालेचा, शांतिलाल भंसाली, सुरेंद्र बी० सालेचा, तेयुप अध्यक्ष जितेंद्र मांडोत, हितेश संखलेचा अनेकजनों ने बहन वीनू संखलेचा के लाडनूं प्रवेश के प्रति मंगलभावना व्यक्त की एवं अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी।

तेरापंथ महिला मंडल द्वारा विदाई गीत के साथ तेरापंथ कन्या मंडल की ओर से संयोजिका कोमल श्रीश्रीमाल, कुनिका बागरेचा द्वारा वीनू संखलेचा का अभिनंदन किया गया। कार्यक्रम का संचालन कांतिलाल ढेलड़िया ने किया।

मंगलभावना समारोह

सरदारपुरा।

तेरापंथी सभा द्वारा मुनि तत्त्वरुचि जी आदि का मंगलभावना समारोह मनाया गया। भगवान महावीर की स्तुति से प्रारंभ हुए इस कार्यक्रम में सभाध्यक्ष माणकचंद तातेड़, तेयुप अध्यक्ष महावीर चौधरी, वरिष्ठ श्रावक धनपत मेहता, तेमम मंत्री चंदा जीरावला आदि सभा-संस्थाओं के पदाधिकारियों ने मुनिद्वय के प्रति मंगलभावना व्यक्त की।

तेयुप भजन मंडली व तेमम ने सुमधुर गीत द्वारा मंगलभावना व्यक्त की। मुनि संभव कुमार जी ने साधु के कर्तव्य को बताते हुए जैन चतुर्मास और विहार की महत्ता को बताया।

मुनि तत्त्वरुचि जी ने कहा कि जैन मुनि किसी एक स्थान विशेष से बंधे नहीं रहते, निर्मोही साधु चातुर्मास संपन्न होते ही गुरु आज्ञा से विभिन्न क्षेत्रों में विहार हेतु प्रस्थान कर देते हैं। जोधपुर का यह चातुर्मासिक प्रवास मंगलकारी रहा। गुरु के आदेशानुसार हमें लाडनूं की ओर विहार करना है। जोधपुर समाज आध्यात्मिक विकास करता रहे, यही मंगलकामना। मंच संचालन सभा मंत्री महावीर चौपड़ा ने किया।

मंगलभावना समारोह

पीलीबंगा।

'हमारी तो आई प्रस्थान की घड़ियाँ पर तुम लोग तपस्या, जप-तप करते रहना, भवन में ताला/जाला न लगे, धर्म की बगिया खिलाते रखना'। ये उद्गार मंगलभावना कार्यक्रम में साध्वी प्रतिभाश्रीजी ने कहे। कार्यक्रम का प्रारंभ मंगलाचरण द्वारा राजकुमार छाजेड़ ने किया।

तेमम, प्रीति डाकलिया द्वारा गीतिका के माध्यम से तथा ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं, ज्ञानशाला के छोटे-छोटे बच्चों ने भी अपनी प्रस्तुति दी। सभा के अध्यक्ष हनुमान रोहतकिया एवं मंत्री प्रकाश डाकलिया, प्रेक्षावाहिनी संयोजक ओम पुगलिया, ज्ञानशाला आंचलिक संयोजिका प्रतिभा दुगड़ आदि अनेकजनों ने अपने विचारों के साथ साध्वीश्री जी को सफल चातुर्मास की बधाई दी एवं शुभ विहार की मंगलकामना की।

इस अवसर पर समाज के प्रतिष्ठित जन उपस्थित रहे, कार्यक्रम का संचालन सुशीला नाहटा ने किया।

अणुव्रत दिवस

कटक।

अणुव्रत समिति द्वारा आचार्यश्री तुलसी के १०८वें जन्म दिवस पर विशेष अभ्यर्थना कार्यक्रम 'एक शाम तुलसी के नाम' का आयोजन तेरापंथ भवन में रखा गया। समिति के सदस्यों द्वारा मंगलाचरण से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। कल्पना जैन एवं किरण देवी बैंगानी ने अणुव्रत आचार संहिता का वाचन किया। अध्यक्ष मुकेश डूंगरवाल ने गुरुदेव श्री तुलसी का विशेष अवदान अणुव्रत से जुड़ने का निवेदन किया।

महासभा के संरक्षक मोहनलाल सिंघी ने उनके अवदानों में अपनी शक्ति का नियोजन करने की प्रेरणा दी। उपासक पानमल नाहटा ने उनके जीवन के विभिन्न आयामों के विषयों के बारे में जानकारी दी। राष्ट्रीय कवि संगम की प्रांतीय महामंत्री पुष्पा सिंघी ने उनके द्वारा बताए गए मार्ग को जीवन में उतारने की प्रेरणा दी। अणुव्रत समिति के परामर्शक हीरालाल खटेड़, सभा के मंत्री मनोज दुगड़, तेयुप अध्यक्ष योगेश सिंघी, महिला मंडल की पूर्व अध्यक्षा सायर सिंघी ने अपनी अभ्यर्थना व्यक्त की। मंत्री विकास नौलखा ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन सहमंत्री वर्षा मरोठी ने किया।

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि - अमूल्य निधि

नूजन गृह प्रवेश

दिल्ली।

प्रदीप-जयश्री संचेती, मोमासर निवासी, दिल्ली प्रवासी का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक संजय खटेड़, संस्कारक प्रवीण गोलछा व संस्कारक मनीष बरमेचा ने संपूर्ण विधि-विधान व मंगलमंत्रोच्चार से संपादित करवाया।

कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। दिल्ली सभा के महामंत्री डालमचंद बैद द्वारा मंगलभावना यंत्र की विधिवत स्थापना करवाई गई।

कार्यक्रम में महासभा के संरक्षक कन्हैयालाल जैन (पटावरी), महासभा के ट्रस्टी जसराज मालू के साथ भारतीय जैन संगठन के पदाधिकारीगण, सदस्यगण आदि उपस्थित रहे। तेयुप, दिल्ली की तरफ से संचेती परिवार को मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

नामकरण संस्कार

दिल्ली।

यूनाईटेड स्टेट्स प्रवासी राजकुमार-सारिका नाहटा की सुपौत्री व मोहित-नम्रता नाहटा की सुपुत्री का नामकरण जैन संस्कार विधि से उपासक-संस्कारक विमल गुनेचा, संस्कारक प्रकाश सुराणा, सुरेंद्र नाहटा, प्रवीण गोलछा, मनीष बरमेचा ने संपूर्ण विधि व मंगल मंत्रोच्चार से सानंद ऑनलाइन जूम एप से संपादित करवाया। इस कार्यक्रम में यू०एस० से सहयोगी के रूप में सारिका नाहटा ने अहम् भूमिका निभाई।

सभी संस्कारकों ने नाहटा परिवार का आभार ज्ञापन किया एवं शुभकामनाएँ दी। नाहटा परिवार की तरफ से हाथीमल नाहटा ने पधारे हुए सभी संस्कारकों व मेहमानों का आभार ज्ञापन किया। सुमन छाजेड़ ने भी मंगल मंत्रोच्चार से आशीर्वाद प्रदान किया।

नूतन गृह प्रवेश

बैंगलुरु।

बैंगलोर निवासी राकेश संचेती के नवनिर्मित प्रतिष्ठान का गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से कराया गया। संस्कारक विक्रम दुगड़ व जितेंद्र घोषल ने जैन संस्कार विधि की सुचारु रूप से व्याख्या की। कार्यक्रम का संचालन संस्कारक विक्रम दुगड़ ने किया।

तेयुप अध्यक्ष विनय बैद ने परिवार के प्रति आभार व्यक्त किया। नीलम संचेती ने परिषद के प्रति आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर नौरतनमल सुराणा, उर्मिला सुराणा उपस्थित रहे।

नवीन प्रतिष्ठान शुभारंभ

अहमदाबाद।

सज्जन लाल अतुल अभिषेक सिंघवी के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से करवाया गया। जैन संस्कार विधि के मुख्य प्रशिक्षक डालिमचंद नोलखा, अशोक सिंघवी एवं दिनेश धुप्या ने मांगलिक मंत्रोच्चार के साथ विधि को संपादित किया।

परिषद की ओर से स्मृति चिह्न के रूप में मंगलभावना पत्र की भेंट दी गई। इस अवसर पर समाज के अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

नामकरण संस्कार

गंगाशहर।

गंगाशहर निवासी मनीष-मोनिका छल्लाणी की नवजात पुत्री का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से आयोजित हुआ। कार्यक्रम अभातेयुप संस्कारक धर्मेन्द्र डाकलिया व देवेंद्र डागा ने विधिविधानपूर्वक मत्रोच्चार सहित संपन्न करवाया।

कार्यक्रम के दौरान प्रेम छल्लाणी, धनपत भंसाली सहयोगी के रूप में उपस्थित रहे। इस अवसर पर समाज के गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही।

नूतन गृह प्रवेश

गंगाशहर।

उदासर निवासी अजय-समता सेठिया के नूतन गृह का शुभारंभ जैन संस्कार विधि द्वारा अभातेयुप संस्कारक रतनलाल छल्लाणी और देवेंद्र डागा ने विधि-विधानपूर्वक मंत्रोच्चार के साथ संपन्न करवाया। इस अवसर पर समाज व परिवार के सदस्यों की उपस्थिति रही।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
29 नवंबर - 5 दिसंबर, 2021

✦ *पाँच आश्रवों में मिथ्यात्व, अव्रत, प्रमाद और कषाय–ये चार नितांत पाप हैं। योग आश्रव के दो प्रकार हैं–शुभ और अशुभ।*
–आचार्यश्री महाश्रमण

आत्मा के आसपास

❑ **आचार्य तुलसी** ❑

प्रेक्षा : अनुप्रेक्षा

उपसंपदा के सूत्र

(क्रमशः) बुद्ध एक पल मुसकराए और बोले–'शिष्यो! मैं अपनी भूल का परिमार्जन कर रहा हूँ। कुछ क्षण पहले एक मक्खी मेरे ऊपर बैठी थी, उसको मैंने उड़ा तो दिया, पर ज्ञानपूर्वक नहीं उड़ाया। उस समय मैं जागरूक नहीं था। मेरा मन कहीं और था और हाथ ने यंत्र की भाँति ऊपर उठकर मक्खी को भगा दिया। अपनी उस लापरवाही का बोध होने के बाद मैं पूर्ण जागरूकता के साथ मक्खी उड़ाने का अभ्यास कर रहा हूँ ताकि भविष्य में यह लापरवाही बढ़े नहीं।'

शिष्यों ने सुना और समझा भावक्रिया का रहस्य। यह भावक्रिया ही ऐसा तत्त्व है जो व्यक्ति को अपनी बुरी आदतों और दुष्प्रवृत्तियों के प्रति जागृत करता है। इसके अनुसार व्यक्ति क्रोध भी करे तो उसे भान होना चाहिए कि मैं अभी क्रोध की अवस्था में हूँ। जागृत दशा में होने वाला क्रोध उतना घातक नहीं होता, जितना बेहोशी में किया गया क्रोध होता है। अच्छाई हो या बुराई, उसके प्रति जागरूक रहने से ही वृत्तियाँ उदात्त हो सकती हैं। चेतना के ऊर्ध्वारोहण या वृत्तियों के उदात्तीकरण के लिए भावक्रिया की साधना बहुत लाभप्रद है।

प्रश्न : उपसंपदा के ये पाँचों सूत्र बहुत व्यावहारिक हैं और इनकी उपयोगिता भी निर्विवाद है। किंतु समस्या यह है कि ये सब जीवन में आ कैसे सकते हैं?

उत्तर : सामान्यतः उपसंपदा की स्वीकृति के साथ साधी जाने वाली ये पाँचों बातें प्रतिस्रोत की दिशाएँ हैं। अनुस्रोत में चलना बहुत सरल है। एक छोटे से तिनके को पानी के प्रवाह में डाल दिया जाए तो वह प्रवाह के साथ बहता हुआ सैकड़ों-हजारों मील तक जा सकता है। किंतु प्रतिस्रोत में उसकी गति अवरुद्ध हो जाती है। मनुष्य भी स्वभाव से अनुस्रोतगामी होता है। प्रतिस्रोत में चलने के लिए अतिरिक्त क्षमता और साहस की जरूरत होती है। प्रेक्षाध्यान का साधक जिस समय ध्यान की उपसंपदा स्वीकार करता है, प्रतिस्रोत में चलने का संकल्प स्वीकार कर लेता हैं संकल्प पुष्ट होता है तो उपर्युक्त सूत्रों की साधना भी स्वाभाविक हो जाती है। संकल्प की शिथिलता में ये सूत्र भी बड़े कठिन और दुरूह प्रतीत होने लगते हैं। उपसंपदा के इन पाँचों सूत्रों को आत्मसात करने के लिए साधक को अपने लक्ष्य से प्रतिबद्ध होकर चलना होगा। लक्ष्य-प्रतिबद्धता के बाद कोई भी स्थिति साधक के मार्ग में अवरोध नहीं बन सकती।

ध्यान की पूर्व तैयारी

अब प्रेक्षा की गतिविधि और क्रमिक अभ्यास।
करूँ विवेचन शांतमन साधिकार सव्यास।।
प्रातः पश्चिम रात में साधक बने सचेत।
नित्य कर्म से निबट सब हो जाएँ समवेत।।
द्वंद्व विचारों का सघन चलता है दिन रात।
उससे मानस मुक्त हो सबसे पहली बात।।

प्रश्न : प्रेक्षाध्यान का सैद्धांतिक पक्ष आपने बतला दिया। उसका कोई व्यावहारिक पक्ष भी है?

उत्तर : साधन की प्रत्येक पद्धति सिद्धांत और व्यवहार–इन दो तटों के मध्य प्रवहमान धारा है। जिस पद्धति के पीछे कोई सैद्धांतिक आधार नहीं होता, वह पद्धति दीर्घकाल तक टिक नहीं सकती और जिस सिद्धांत की क्रियान्विति नहीं होती, वह उपयोगी नहीं बन सकता। आज तक न जाने कितनी साधना-पद्धतियाँ आविर्भूत होकर विलीन हो गईं, क्योंकि उनके सैद्धांतिक और व्यावहारिक पक्ष पुष्ट नहीं थे। प्रेक्षाध्यान के तत्त्व जैन आगमों में विकीर्ण हैं। जैन आचार्य समय-समय पर उन सिद्धांतों को काम में लेते रहे हैं, पर किसी कारण से वे उनकी व्यावहारिक पद्धति को प्रस्तुति नहीं दे सके। इसलिए ध्यान की धारा रुक-रुककर प्रवाहित हुई। उस अवरोध को तोड़ने के लिए यह आवश्यक था कि ध्यान-साधना का व्यावहारिक पक्ष व्यवस्थित रूप में उजागर हो। उसका प्रायोगिक रूप सबके लिए सुलभ हो, इस दृष्टि से प्रेक्षा का पूरा साधना-क्रम निश्चित किया गया है। प्रेक्षाध्यान की गतिविधि क्या है। और उसका अभ्यास क्रम क्या है? इस संबंध में विवेचन करने के लिए तीन बातें आवश्यक हैं–शांत मन, अधिकारपूर्ण वक्तव्य और विस्तार से तत्त्व निरूपण।

अभ्यास की सामान्य पद्धति में पहला काम है–जागरण। रातभर सोने के बाद प्रातः नींद को छोड़ना आवश्यक है। नींद छोड़कर जागने का सामान्य समय है, पश्चिम रात्रि। जो साधक चार बजे के आस-पास उठ जाते हैं, वे अपनी साधना का सम्यक् संचालन कर सकते हैं। जिन लोगों के सोने और जागने का समय नियमित नहीं होता, जो देर से सोते हैं और देर से ही उठते हैं, उनकी दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो जाती है। ऐसे लोग साधक नहीं बन सकते।

प्रश्न : ताने फकीर से किसी ने पूछा–'आपकी साधना क्या है?' फकीर ने उत्तर दिया–'नींद आती है, तब सो जाता हूँ। भूख लगती है, तब खा लेता हूँ। नींद खुलती है, तब उठ जाता हूँ। बोलने की इच्छा होती है, तो बोल लेता हूँ। अन्यथा मौन रहता हूँ।' शयन और जागरण के संबंध में ताने फकीर का यह सिद्धांत कैसा है? चार बजे नियमित रूप से किसी साधक की नींद न टूटे और उसे उठाना पड़े तो उसकी क्रियाओं में सुस्ती रहती है तथा ध्यान में भी वह ऊँघने लगता है। ऐसी स्थिति में जब नींद खुले, तभी जागरण का समय उपयुक्त नहीं है क्या?

उत्तर : व्यक्तिगत रूप से साधना करने वाला और साधना की प्रारंभिक भूमिकाओं को पार कर लेने वाला साधक कुछ दृष्टियों से अप्रतिबद्ध हो जाता है। अग्रिम भूमिकाओं में स्वाभाविक रूप से जीना साधना का एक अंग बन सकता है। किंतु जिन्होंने अभी साधना का प्रारंभ ही किया है और जो इस क्षेत्र में कुछ सीखना चाहते हैं उन्हें तो व्यवस्थित और नियमित चर्या का अभ्यास करना ही होगा। निश्चित समय पर उठने से आलस्य और ऊँघ की जो बात कही गई, वह बहुत अधिक महत्त्वपूर्ण नहीं है। क्योंकि अभ्यास के द्वारा ऐसी आदत निर्मित की जा सकती है, जो व्यक्ति को ठीक समय पर नींद से उठा देती है। अन्यथा निद्रा का तो यह हाल है कि आदमी उसे जितना चाहे, बढ़ा-चढ़ा सकता है। कहा भी गया–

आलस्यं मैथुनं निद्रा, क्षुधा क्रोधश्च पंचमः।
पंच वर्धन्ति कौन्तेय! सेव्यमानानि नित्यशः।।

(क्रमशः)

साँसों का इकतारा

❑ **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा** ❑

(३५)

तृप्ति की सौगात है तुम पर निछावर
पी सकूँ सागर मुझे वह प्यास दे दो
पंख अपने सौंपती हूँ आज तुमको
तुम मुझे निस्सीम नभ में वास दे दो।।

आवरण अज्ञान का है इस जगत पर
ज्योति का अवदान उसको कौन देगा?
छा रही गहरी उदासी जिंदगी में
फूल खुशियों का वहाँ कैसे खिलेगा?
अब सहारा बस तुम्हारा ही बचा है
घुट रही जो साँस उसको आस दे दो।।

दर्द से टूटा हुआ मन आदमी का
क्या भरोसा दीप आस्था का जलाए
आ रहे तूफान पर तूफान ही जब
आशियाँ अपना वहाँ कैसे बनाए?
जम रहे शैवाल जो भ्रम के निरंतर
दूर कर उनको अटल विश्वास दे दो।।

बरसते अंगार शीतल चाँदनी से
तिमिर का साम्राज्य दीपक के तले हो
पंथ मंजिल से स्वयं भटका हुआ है
सत्य क्या सपने न पलकों में पले हैं
दूर तक खामोशियों का एक जंगल
तुम नई उम्मीद नव उल्लास दे दो।।

(३६)

जिस धरती पर जन्म तुम्हारा मिला उसे अनुपम उपहार
पहचाना जिस युग ने तुमको उसको साधुवाद सौ बार।।

मन के गीत पुकारे तुमको अधरों पर तेरा ही नाम
प्राणों में बस रहे निरंतर तुम ही हो आस्था के धाम
पूर्णकाम बनकर भी पल-पल रचते हो नूतन संसार।।

जिन आँखों में रूप तुम्हारा सार्थक है उनका होना
अंकित होते चरण जहाँ पर मिट्टी बन जाती सोना
जीवन-नभ में सूर्य उगाकर धो डालो तम का विस्तार।।

जय हो जय जीवन के केवट नाव पड़ी मझधारा में
मुक्त करो उन सबको जो हैं रूढ़िवाद की कारा में
तुम ही नई दिशा दे सकते झाँक लिया सागर के पार।।

अमृतपर्व की मंगल वेला सुधा पिलाओ जन-जन को
दिव्य पुरुष हो दिव्य दान से पुलकन से भर दो मन को
महाप्राण! तुमको अर्पित है मेरे सब सपने सुकुमार।।

(क्रमशः)

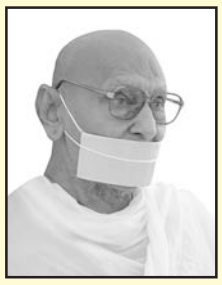

संबोधि

❑ आचार्य महाप्रज्ञ ❑

आज्ञावाद

भगवान् प्राह

(२२) अविहिताऽनिषिद्धा च, तृतीया वृत्तिरस्य सा।
सर्वहिंसापरित्यागी, नाऽसौ तेन प्रवर्तते।।

गृहस्थ की तीसरी वृत्ति जो है, वह न विहित है और न निषिद्ध है। वह सर्व-हिंसा का परित्यागी नहीं होता, इसलिए उस वृत्ति का अवलंबन लेता है।

वृत्तियाँ तीन प्रकार की होती हैं—

(१) विहित—जिनका विधान किया गया है, जैसे—धर्म की उपासना करना, अहिंसा का आचरण करना।

(२) निषिद्ध—जिनका निषेध किया जाता है, जैसे—मांस का व्यापार न करना, व्यभिचार न करना आदि।

(३) न विहित, न निषिद्ध—जिसका न विधान होता है और न निषेध, जैसे—विवाह करना, व्यापार करना आदि। इन प्रवृत्तियों के बिना गृहस्थाश्रम चल नहीं सकता। इस श्लोक में यही समझाया गया है कि गृहस्थ संपूर्ण रूप से हिंसा का त्याग नहीं कर सकता, क्योंकि एक गृहस्थ के नाते उसे अनेक जिम्मेदारियाँ निभानी होती हैं। वह भिक्षा से अपना जीवन नहीं चला सकता, अतः उसे व्यापार करना पड़ता है। व्यापार में हिंसा भी होती है। वह वाहनों का उपयोग करता है। आवश्यकतावश छह जीवों का समारंभ भी करता है। उसकी समस्त पापमय प्रवृत्तियों का निषेध नहीं किया जा सकता। हिंसा हिंसा है, परंतु क्षेत्र या अवस्था भेद से वह विहित या अविहित होती है।

(२३) हिंसाविधानं नो शक्यं, तेन साऽविहिता खलु।
अनिवार्या जीविकायै, निरोद्धुं शक्यते न तत्।।

हिंसा का विधान नहीं किया जा सकता, इसलिए वह अविहित है और आजीविका के लिए जो अनिवार्य हिंसा हो उसका निषेध नहीं किया जा सकता, इसलिए वह अनिषिद्ध है।

पूर्ण अहिंसक व्यक्ति की अपनी मर्यादा होती है। वह हिंसा का निषेध और अहिंसा के आचरण का उपदेश देता है। आवश्यक हिंसा का भी अनुमोदन या विधान उसके द्वारा नहीं हो सकता। अहिंसक के सामने आवश्यकता और अनावश्यकता का प्रश्न मुख्य नहीं होता। जीवन और मृत्यु का प्रश्न भी महत्त्वपूर्ण नहीं होता। उसके सामने मुख्य प्रश्न होता है—अहिंसा की सुरक्षा। हिंसा उसे किसी भी हालत में स्वीकार्य नहीं होती। इसलिए वह हिंसा का विधान कर ही नहीं सकता। वह अहिंसा के पालन के लिए प्राणों का विसर्जन भी करने में तत्पर होता है, किंतु न स्वयं हिंसा करता है और न दूसरों को उस ओर प्रेरित करता है।

दूसरी बात यह है कि वह हिंसा न करने का सर्वथा निषेध भी नहीं कर सकता। क्योंकि गृहस्थ जीवन में अनिवार्य हिंसा से बचा नहीं जा सकता। यदि वह उसका निषेध करता है तो उसका कथन अव्यवहार्य बन जाता है। अतः उसे मध्यम-मार्ग का अवलंबन लेना पड़ता है।

(२४) द्विविधो गृहिणां धर्म, आत्मिको लौकिकस्तथा।
संवरो निर्जरा पूर्वः, समाजाभिमतोऽपरः।।

गृहस्थों का धर्म दो प्रकार का होता है—आत्मिक और लौकिक। आत्मिक-धर्म के दो प्रकार हैं—संवर और निर्जरा। समाज के द्वारा अभिमत धर्म को लौकिक धर्म कहा जाता है।

धर्म दो प्रकार का है—आत्मिक और लौकिक। सामायिक, संवर, पौषध, त्याग, ध्यान, तपस्या आदि आत्मिक धर्म है। इसमें अहिंसा आदि धर्मों का विमर्श और आचरण मुख्य होता है। संक्षेप में आत्माभिमुखी सारी प्रवृत्तियाँ आत्मिक धर्म के अंतर्गत आती हैं। लौकिक धर्म का अर्थ है—समाज द्वारा अभिमत आचार। इसमें हिंसा-अहिंसा का विचार मुख्य नहीं होता, मुख्य होता है सामाजिक आचार, नीति। समाज धर्म समाज-सापेक्ष होता है। वह ध्रुव नहीं होता, परिवर्तनशील होता है। लौकिक धर्म की विचारणा में मोक्ष का विमर्श गौण होता है, सामाजिक अभ्युदय का विचार मुख्य होता है। **(क्रमशः)**

अवबोध

❑ मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ❑

(३) चारित्र मार्ग

प्रश्न-७ : चारित्र कौन से गुणस्थान में होते हैं?
उत्तर : सामायिक व छेदोपस्थापनीय छठे से नौवें, परिहार विशुद्धि छठे व सातवें, सूक्ष्म संपराय दसवें तथा यथाख्यात ग्यारहवें से चौदहवें गुणस्थान में होता है।

प्रश्न-८ : चारित्र छह द्रव्य में कौन व नौ तत्त्व में कौन है?
उत्तर : पाँचों ही चारित्र छह मे जीव, नौ में परिहार विशुद्धि तीन—जीव, संवर, निर्जरा, शेष चार चारित्र दो—जीव, संवर। परिहार विशुद्धि चारित्र तपस्यामूलक होने से उसमें निर्जरा भी मानी गई है।

प्रश्न-९ : चारित्र कौन सा भाव व कौन सी आत्मा है?
उत्तर : चारित्र—भाव चार-औदयिक को छोड़कर
आत्मा एक —चारित्र। **(क्रमशः)**

उपासना

(भाग - एक)

❑ **आचार्य महाश्रमण** ❑

आचार्य वज्रस्वामी

(क्रमशः) कालिक सूत्रों की अपृथक्त्व व्याख्यान पद्धति (प्रत्येक सूत्र का चरणकरणानुयोग आदि चारों अनुयोगों से विभागशः विवेचन) भी आर्य वज्रस्वामी के बाद अवरुद्ध हो गई।

वज्रस्वामी दशपूर्वधर थे। वे पदानुसारी लब्धि, क्षीरास्रवलब्धि आदि के धारक गगनगामिनी विद्या के उद्धारक, नानारूप निर्मात्री विद्या के स्वामी थे। दशपूर्वों की विशाल ज्ञानराशि के अंतिम संरक्षक आर्य वज्र ही थे। उनके बाद ऐसी क्षमता किसी को भी प्राप्त न हो सकी। महानिशीथ सूत्र के तृतीय अध्ययन में प्राप्त उल्लेखानुसार, पंचमंगल श्रुतस्कंध को मूल सूत्रों के साथ नियोजित करने का महत्त्वपूर्ण कार्य उन्होंने किया था। उससे पहले पंचमंगल महाश्रुतस्कंध (नमस्कार महामंत्र) एक स्वतंत्र ग्रंथ के रूप में प्रतिष्ठित था। इस सूत्र की व्याख्या में कई निर्युक्ति भाष्य और चूर्णि ग्रंथ भी थे। कालक्रम से ये लुप्त हो गए।

वज्रस्वामी नौ वर्ष तक गृहस्थ जीवन में रहे, उनका जन्म के बाद छह मास तक का समय माँ के संरक्षण में बीता। उसके बाद उनका पालन-पोषण गुरु नेश्राय में शय्यातर के घर पर हुआ। उनकी कुल आयु अट्ठासी वर्ष थी। मुनि पर्याय की कुल अस्सी वर्ष की कालस्थिति में लगभग छत्तीस वर्ष तक उन्होंने युगप्रधान पद पर रहकर धर्मसंघ का सफलतापूर्वक संचालन किया। विलक्षण वाग्मी आचार्य वज्रस्वामी वी०नि० ५८४ (वि०सं० ११४, ई० सन् ५७) में स्वर्गवासी हुए।

अतिशय विद्याओं के धनी, विलक्षण वाग्मी आर्य वज्र जैनधर्म के सबल आधार-स्तंभ थे।

आचार्य आर्यरक्षित

अनुयोग-व्यवस्थापक आर्यरक्षित की गणना युगप्रधान आचार्यों में है। पूर्वधर आचार्यों में भी उनका महत्त्वपूर्ण स्थान है। आयरक्षित अंतिम सार्ध नौ पूर्वधर थे। उन्होंने जैनशासन में कई नई प्रवृत्तियों की स्थापना की और विकास का द्वार खोला।

आर्यरक्षित के गुरु आर्य तोषलिपुत्र थे। आर्यरक्षित ने दीक्षाप्रदाता गुरु तोषलिपुत्र से आगमों का अध्ययन किया तथा पूर्वों का अध्ययन उन्होंने दश पूर्वधर वज्रस्वामी के पास किया था। अतः तोषलिपुत्र आर्यरक्षित के दीक्षा गुरु थे और विद्यागुरु भी थे। आर्य वज्रस्वामी उनके पूर्वज्ञानप्रदाता विद्यागुरु थे।

आर्यरक्षित का जन्म मध्यप्रदेश-अंतर्गत (मालव) दशपुर (मंदसौर) निवासी ब्राह्मण परिवार में वी०नि० ५२२ (वि० ५२, ई०पू० ५) में हुआ। आर्यरक्षित के पिता का नाम सोमदेव और माता का नाम रुद्रसोमा एवं लघु भ्राता का नाम फल्गुरक्षित था।

आर्यरक्षित के पिता सोमदेव को दशपुर नरेश उदायन के यहाँ राजपुरोहित का सम्मानित स्थान प्राप्त था। राजपुरोहित सोमदेव की पत्नी रुद्रसोमा उदारहृदय और प्रियभाषिणी महिला थी। वह जैनशासन की दृढ़ उपासिका थी।

वर्णज्येष्ठ, कुलज्येष्ठ, क्रियानिष्ठ, कलानिधि सोमदेव को नागरिक जनों से विशेष आदर भाव प्राप्त था। उसके दो पुत्र थे—आर्यरक्षित और फल्गुरक्षित। दोनों पुत्र सूर्याश्व की भाँति कुल की धुरा को वहन करने में सक्षम थे। पुरोहित सोमदेव ने दोनों पुत्रों को वेदों का सांगोपांग अध्ययन करवाया। आर्यरक्षित को अपने अध्ययन से संतोष नहीं था। उसमें उच्च शिक्षा पाने की तीव्र उत्कंठा थी। पुत्र की भावना को समझकर पिता ने विशिष्ट अध्ययन के लिए उसे पाटलिपुत्र भेजा। पाटलिपुत्र उच्च शिक्षा का केंद्र था। रक्षित ने वहाँ पर रहकर वेद-वेदांग आदि चतुर्दश विद्याओं का गहन अध्ययन किया। यथेप्सित अध्ययन कर लेने के बाद उपाध्याय का आदेश प्राप्त कर विद्वान् रक्षित दशपुर लौटा। राजपुरोहित-पुत्र होने के कारण आर्यरक्षित को राज-सम्मान प्राप्त हुआ तथा नागरिकों ने हार्दिक अभिवादन किया। सभी का भव्य स्वागत स्वीकार करता हुआ रक्षित माँ के पास पहुँचा। रुद्रसोमा सामायिक कर रही थी। उसने आशीर्वाद देकर अपने पुत्र का वर्धापन नहीं किया।

राजसम्मान पा लेने पर भी माँ के आशीर्वाद के बिना जननी-वत्सल आर्यरक्षित खिन्न था। उसने सोचा—मैं शास्त्र समूह को पढ़ लेने पर भी माँ को तोष नहीं दे सका। सुत के उदासीन मुख को देखकर सामायिक संपन्नता के बाद रुद्रसोमा बोली—'पुत्र! जो विद्या तुझे आत्मबोध न करा सकी उससे क्या? मेरे मन को प्रसन्न करने के लिए आत्मकल्याणकारी जिनोपदिष्ट दृष्टिवाद का अध्ययन करो।' आर्यरक्षित ने चिंतन किया—'दृष्टिवाद का नाम भी सुंदर है। इसका अध्ययन मुझे अवश्य करना चाहिए।' माँ से आर्यरक्षित ने दृष्टिवाद के अध्यापनार्थ अध्यापक का नाम जानना चाहा। रुद्रसोमा ने बताया—'अगाध ज्ञान के निधि, दृष्टिवाद के ज्ञाता आर्य तोषलिपुत्र नामक आचार्य इक्षुवाटिका में विराज रहे हैं। जाओ पुत्र! उनके पास अध्ययन प्रारंभ करो। तुम्हारी इस प्रवृत्ति से अवश्य ही मुझे शांति की अनुभूति होगी।'

(क्रमशः)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
29 नवंबर - 5 दिसंबर, 2021

✦ *गृहस्थ के लिए सांसारिक और आध्यात्मिक दोनों दृष्टिकोण हो सकते हैं, किंतु साधु को आत्माभिमुखी रहना चाहिए। उसके लिए पदार्थ गौण होता है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

टीपीएफ के विविध कार्यक्रम

श्रावक संबोध कार्यशाला का आयोजन

नोएडा।

नोएडा द्वारा संचालित श्रावक संबोध कार्यशाला-२ का आरंभ किया गया। नवकार मंत्र रितू श्यामसुखा द्वारा पढ़ा गया। मंगलाचरण रीता श्यामसुखा ने किया। स्वागत डॉ० आरती बोथरा कोचर ने किया। मुंबई से राजेंद्र बैंगानी ने श्रावक संबोध की महत्ता को बताया। वक्ता का परिचय दीपिका चोरड़िया ने प्रस्तुत किया।

वक्ता चाँद छाजेड़ ने ६ से १५ तक के पदों का विस्तार से वर्णन किया। इसके नियम प्रेम सेखानी द्वारा बताए गए। यह प्रश्नोत्तरी मुकेश दुधोड़िया, कनिष्क बैद, प्रेम सेखानी द्वारा तैयार की गई। एक व्हाट्सएप ग्रुप के द्वारा सभी नियम और जानकारियाँ व सिलेबस साझा किया जाता है। अभी इस ग्रुप में २०० सदस्य हैं। कार्यशाला का आभार टीपीएफ, नोएडा की सहमंत्री डॉ० कमला जैन द्वारा किया गया।

मेधावी सम्मान समारोह

उदयपुर।

टीपीएफ द्वारा मेधावी छात्र सम्मान समारोह का आयोजन साध्वी सुदर्शना जी, साध्वी पुनीतयशा जी, साध्वी लक्षितप्रभा जी, साध्वी प्रगतिप्रभा जी व साध्वी प्रणतिप्रभा जी के सान्निध्य में महाश्रमण सभागार, महाप्रज्ञ विहार में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नवकार महामंत्र से हुई। कुणाल, अनिता गांधी द्वारा टीपीएफ गीत की प्रस्तुति दी गई। टीपीएफ, उदयपुर अध्यक्ष मुकेश बोहरा ने स्वागत उद्बोधन द्वारा टीपीएफ द्वारा किए जा रहे कार्यों के बारे में बताया व प्रतिभा सम्मानित बच्चों का उत्साहवर्धन किया।

तेरापंथ सभा अध्यक्ष अर्जुन खोखावत ने कहा कि इस तरह के कार्यक्रम में समाज की प्रतिभाओं को आगे आने का मौका मिलता है। महिला मंडल अध्यक्ष सीमा पोरवाल ने उपस्थित बच्चों को शिक्षा के साथ धर्म को अपनाने का आह्वान किया। अणुव्रत समिति अध्यक्ष आलोक पगारिया ने आज के समय में टीपीएफ के गठन व इसके योगदान को सराहा।

साध्वी सुदर्शना जी ने शिक्षा बने समाधान में बताया कि शिक्षा व अध्यात्म के मिलन द्वारा समाज में विशिष्ट स्थान प्राप्त किया जा सकता है।

साध्वी प्रगतिप्रभा जी अपने उद्बोधन में बच्चों को प्रेरित किया एवं शांत मन की महत्ता बताई। सहवर्ती साध्वीवृंद ने गीत की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम में ४८ छात्र-छात्राओं को सूर्यप्रकाश मेहता, सभा मंत्री विनोद कच्छारा, निर्मला कुणावत, आदि अनेक सदस्यगण द्वारा सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के अंत में राष्ट्रीय ट्रस्टी चंद्रेश बाफना द्वारा टीपीएफ की विभिन्न शिक्षा परियोजनाओं के बारे में बताया तथा आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम का संचालन अनुश्री जैन, भव्यश्री जैन व कार्यक्रम संयोजक ममता बोहरा द्वारा किया गया। रोनक कोठारी, प्रनवी व यथार्थ द्वारा व्यवस्था में सहयोग प्रदान किया गया।

अणुव्रत समिति संगठन संगोष्ठी

हैदराबाद।

अणुव्रत विश्व भारती के तत्त्वावधान व अणुव्रत समिति की आयोजना में संगठन गोष्ठी हुई। साध्वी निर्वाणश्री जी के सान्निध्य में अणुव्रत पर विशेष वार्ता ज्ञानबाग कॉलोनी में संपन्न हुई। साध्वी निर्वाणश्री जी ने कहा कि अणुव्रत सदैव प्रासंगिक था, है व रहेगा। यह असांप्रदायिक धर्म एक घोषणा पत्र है। अणुव्रत की असांप्रदायिक दृष्टि ही इसकी जीवंतता का आधार हैं यह मानवीय समस्याओं का समाधान दाता है।

प्रबुद्ध वक्ता साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभा जी ने कहा कि अणुव्रत विश्व भारती मानवीय मूल्यों को स्थापित करने वाली अंतर्राष्ट्रीय संस्था है। अणुव्रत समितियों के माध्यम से वह विश्व भर में नैतिकता, सद्भावना, सौहार्द, नशामुक्ति की रोशनी बाँट रही हैं। युवा गौरव अणुविभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं पश्चिमांचल के प्रभारी राजेश सुराणा ने कहा कि अणुव्रत के पास 'सर्वधर्म सद्भाव' जैसी विलक्षण चीज है, जो पूरे विश्व को जोड़ने वाली है।

कार्यक्रम का शुभारंभ भक्तांबर स्त्रोत के समुह संगान से हुआ, जिसे साध्वी मुदितप्रभा जी ने पूर्ण करवाया। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष प्रकाश एच भंडारी ने अपने स्वागत वक्तव्य में सभी का स्वागत किया। पूर्व अध्यक्ष व परामर्शदाता दिलीप डागा, उपाध्यक्ष सरोज भंडारी, तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद के मंत्री सुशील संचेती, तेयुप उपाध्यक्ष प्रमोद भंडारी, तेमम निवर्तमान अध्यक्ष प्रेम पारख आदि ने शुभकामनाएँ दी।

कार्यक्रम का संचालन मंत्री अशोक मेड़तवाल ने किया व सहमंत्री विजय आंचलिया ने धन्यवाद ज्ञापन किया। इस अवसर पर राजेश सुराणा का सभा, महिला मंडल व अणुव्रत समिति, हैदराबाद की ओर से साहित्य आदि से सम्मान किया गया। इस कार्यक्रम में अणुविभा तेलंगाना प्रभारी तिलोक सिपानी, महिला मंडल अध्यक्षा अनिता गिडिया, परामर्शदाता संपत सिंघी आदि अनेक पदाधिकारीगण एवं कार्यकर्ताओं की उपस्थिति रही।

अणुव्रत संगठन यात्रा

राजलदेसर।

अणुव्रत विश्व भारती के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष अशोक डूंगरवाल, महामंत्री भीखमचंद सुराणा एवं राजस्थान प्रभारी प्रकाश भंसाली अणुव्रत संगठन यात्रा के दौरान राजलदेसर पधारे। स्थानीय तेरापंथ भवन में डॉ० साध्वी परमयशा जी के सान्निध्य में एवं राष्ट्रीय पदाधिकारियों के नेतृत्व में स्थानीय अणुव्रत समिति कार्यकारिणी सदस्यों के साथ एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में अणुव्रत विश्व भारती के राष्ट्रीय पदाधिकारियों, अणुव्रत समिति, राजलदेसर कार्यकारिणी सदस्यों, तेरापंथी सभा, तेमम एवं तेयुप के पदाधिकारियों की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम से पूर्व राष्ट्रीय पदाधिकारियों के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं की बैठक रखी गई, जिसमें अणुव्रत गीत का सामूहिक संगान किया गया। सभी का संक्षिप्त परिचय एवं अणुव्रत के राष्ट्रीय स्तर पर चल रही जीवन-विज्ञान, प्रेक्षाध्यान, अहिंसा प्रशिक्षण केंद्र आदि गतिविधियों की जानकारी दी। अणुव्रत विश्व भारती के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष अशोक डूंगरवाल एवं राष्ट्रीय महामंत्री भीखमचंद सुराणा ने अपने विचार व्यक्त किए।

द्वितीय चरण के कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री जी के नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुआ। तत्पश्चात महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण में अणुव्रत गीत का संगान किया गया। अणुव्रत समिति अध्यक्ष शंकरलाल सोनी ने अपने विचार रखते हुए अतिथियों का स्वागत किया।

इस अवसर पर राजस्थान प्रभारी प्रकाश भंसाली ने उपस्थित कार्यसमिति के सदस्यों एवं श्रावक-श्राविकाओं के मध्य अपने विचार प्रकट किए। कार्यक्रम में अणुव्रत कार्यकारिणी की सदस्या डॉ० उषा किरण सोनी ने स्वरचित कविता प्रस्तुत की। डॉ० साध्वी परमयशा जी, साध्वी विनम्रयशा जी, साध्वी मुक्ताप्रभा जी एवं साध्वी कुमुदप्रभा जी ने संयुक्त रूप से स्वरचित गीत का सुमधुर संगान किया।

धन्यवाद ज्ञापन समिति के उपाध्यक्ष वीरेंद्र लाटा ने किया एवं कार्यक्रम का संचालन समिति के मंत्री भुनेश्वर शर्मा ने किया।

इको फ्रेंडली दीपावली

गोरेगाँव।

इको फ्रेंडली दीपावली नो क्रैकर्स कार्यक्रम का आयोजन अणुव्रत समिति द्वारा सभा भवन में किया गया। इसमें ज्ञानशाला के बच्चों एवं प्रशिक्षिकाएँ बहनों के अलावा महिला मंडल एवं कन्या मंडल ने भी अपनी अच्छी उपस्थिति दर्ज कराई। कार्यक्रम में अणुव्रत क्षेत्रीय संयोजक राकेश बोहरा सह-संयोजक दिनेश सिंघवी, अणुव्रत कार्यकारिणी सदस्य डिम्पल हिरण एवं ज्ञानशाला प्रशिक्षक चतर देवी सिंघवी आदि अनेकजनों की उपस्थिति रही।

ज्ञानशाला के बच्चों, प्रशिक्षकों एवं अणुव्रत टीम के द्वारा इको फ्रेंडली दिवाली पर लघु नाटक किया गया। बच्चों एवं बहनों ने अपने विचार रखे। राकेश बोहरा द्वारा बच्चों को गिफ्ट दिए गए।

एकाह्निक तुलसी-शतकम्

मुनि सिद्धकुमार

(क्रमशः)

(५४) रचनाकरणे ब्रह्मा, विष्णुश्च गणपालने।
महेशः शोधने काले, त्रयस्त्वयि प्रतिष्ठिताः।।
रचना-काल में ब्रह्मा, गण की पालना में विष्णु एवं शोधन करते समय महेश। आपमें ये तीनों प्रतिष्ठित थे।

(५५-५६) जननीं भवता बालचपलतावशेन हि।
कथंकथिकता पृष्टा, ह्याचार्यः को भविष्यति।।
जननी वदनाऽवादीत्, मा पृच्छादोऽनुयोजनम्।
कोऽजानीच्च भवानेव, भावीपूज्यो भविष्यति।। (युग्मम्)
बाल चपलतावश आपने अपनी माँ से प्रश्न पूछा कि "अगले आचार्य कौन बनेंगे?" तब माँ वंदना ने आपको टोकते हुए कहा कि "ऐसा प्रश्न नहीं पूछते।" भला यह कौन जानता था कि आप ही भावी पूज्य होंगे।

अहंकार-मुक्ति

(५७) तथापि यौवने जाते तेरापंथविनायकः।
स्वीयाधिगमयासीच्च, नो किञ्चिदप्यहंकृतिः।।
बाईस वर्ष की युवावस्था में आप तेरापंथ के सर्वेसर्वा बन गए फिर भी आपको अपनी उपलब्धि पर किंचित् भी अहंकार नहीं था।

(५८) अभूः सर्वेषु शिष्येषु, त्वं कालुगणिनः प्रियः।
स्वीयाधिगमयासीच्च, नो किञ्चिदप्यहंकृतिः।।
आप सभी शिष्यों में कालुगणी के सबसे प्रिय थे, तो भी आपको अपनी उपलब्धि पर किंचित् भी अहंकार नहीं था।

(५९) कोकिलेभ्योऽपि गुल्यं ते, कर्णप्रियं तु गायनम्।
स्वीयाधिगमयासीच्च, नो किञ्चिदप्यहंकृतिः।।
आपका मधुर संगान कोयलों के लिए भी कर्णप्रिय था, तो भी अपनी उपलब्धि पर आपको किंचित् भी अहंकार नहीं था।

(६०) भवत उपदेशैश्च, जना लक्षाः समुद्धृताः।
स्वीयाधिगमयासीच्च, नो किञ्चिदप्यहंकृतिः।।
आपके उपदेशों से लाखों जनों का उद्धार हुआ, फिर भी आपको अपनी उपलब्धि पर किंचित् भी अहंकार नहीं था।

(६१) आचार्या बहवो जातस्तव तुल्यस्तु कोऽपि ना।
स्वीयाधिगगयात्सीच्च, नो किञ्चिदप्यहंकृति।।
आचार्य तो अनेक हुए हैं, परंतु आपके तुल्य कोई नहीं, तब भी आपको अपनी उपलब्धि पर किंचित् भी अहंकार नहीं था।

(६२) दीक्षाः सर्वाधिका भूता, शिष्टाणां तव शासने।
स्वीयाधिगमयासीच्च, नो किञ्चिदप्यहंकतिः।।
आपके शासनकाल में सर्वाधिक शिष्यों की दीक्षा हुई, फिर भी आपको अपनी उपलब्धि पर किंचित् भी अहंकार नहीं था।

(६३) भवता सर्वाधिकाः प्रान्ताः, पदाभ्यां पावनीकृताः।
स्वीयाधिगमयासीच्च, नो किञ्चिदप्यहंकृतिः।।
आपने अपने शासनकाल में सर्वाधिक प्रांतों को अपने चरणों से पावन किया, फिर भी आपको अपनी उपलब्धि पर किंचित् भी अहंकार नहीं था।

(६४) स्वीयाय भारतज्योत्या, कार्याय त्वमलङ्कृतः।
स्वीयाधिगमयासीच्च, नो किञ्चिदप्यहंकृतिः।।
आप अपने कार्यों के लिए भारत ज्योति अलंकरण से अलंकृत हुए, तथापि आपको अपनी उपलब्धि पर किंचित् भी अहंकार नहीं था।

(६५) गांध्येकता पुरस्कारः, सम्प्राप्तो भवता त्वपि।
स्वीयाधिगमयासीच्च, नो किञ्चिदप्यहंकृतिः।।
आपको इंदिरा गांधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार प्राप्त हुआ। तो भी आपको अपनी इस उपलब्धि पर किंचित् भी अहंकार नहीं था।

(शेष अगले अंक में)

आचार्यश्री तुलसी के १०८वें जन्म दिवस के विविध आयोजन

जीवन जीने की कला सिखाई आचार्यश्री तुलसी ने

रोहिणी, दिल्ली।

तेरापंथ भवन में आचार्यश्री तुलसी का जन्म दिवस के आयोजन में शासनश्री साध्वी रतनश्री जी ने कहा कि लाडनूं की पावन धरती पर एक दिव्य ज्योति किरण अवतरित हुई। धीरे-धीरे उस ज्योति किरण ने एक सूर्य का रूप धारण करके समग्र विश्व में आलोक रश्मियाँ फैलाईं। अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान के द्वारा जीवन जीने की कला सिखाई। अणुव्रत आचार संहिता के द्वारा एक नई सृष्टि का निर्माण हो सकता है। युग की बहती धारा को बदला जा सकता है।

शासनश्री साध्वी सुव्रताजी, शासनश्री सुमनप्रभा जी, साध्वी चिंतनप्रभा जी ने तुलसी के व्यक्तित्व के संदर्भ में विचार व्यक्त किए। साध्वी कार्तिक प्रभा जी ने गीत की प्रस्तुति दी। रोहिणी सभा के अध्यक्ष मदनलाल जैन, भिक्षु मंडल महिला मंडल, ज्ञानशाला एवं अणुव्रत समिति के सदस्यों ने सुमधुर गीतों की स्वर लहरियों से आचार्य तुलसी की अभ्यर्थना की। कार्यक्रम का संचालन सभा के महामंत्री राजेश बैंगाणी ने किया।

ऊर्जा के अक्षय धाम थे आचार्यश्री तुलसी

मदुरै।

आचार्यश्री तुलसी जिन्होंने ११ वर्ष की उम्र में संयमश्री का वरण कर आचार्य कालूगणी के दिल को जीता, २२ वर्ष की उम्र में तेरापंथ जैसे प्राणवान धर्मसंघ के आचार्य पद को सुशोभित किया। तेरापंथ धर्मसंघ का परचम सात समुद्र पार लहराकर एक नया कीर्तिमान बनाया। आचार्यश्री तुलसी ने अनेक अवदान दिए जिसमें एक है—अणुव्रत आंदोलन। अणुव्रत आंदोलन समस्त मानव जाति के लिए वरदान सिद्ध हो रहा है। आचार्यश्री तुलसी ने झोंपड़ी से लेकर राष्ट्रपति भवन तक अणुव्रत की सौरभ फैलाई।

सहयोगी संत मुनि भरत कुमार जी ने कहा कि तेरापंथ के उज्ज्वल नक्षत्र में आचार्यश्री तुलसी ओजस्वी, तेजस्वी, वर्चस्वी आचार्य होकर यशस्वी आचार्य बने।

बाल संत जयदीप कुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। कार्यक्रम में तेरापंथ सभा के अध्यक्ष जयंतीलाल जीरावला, मैसूर से पधारे कन्या लाल देरासरिया, सुरेश गुगलिया, मदन मारू, तेयुप अध्यक्ष संदीप बोकड़िया, स्थानकवासी समाज के अध्यक्ष नेमीचंद बाफना, तेरापंथ सभा के शांतिलाल बुरड़ आदि ने विचार व्यक्त किए। महिला मंडल संरक्षिका चंद्राकांता कोठारी, तेमम व कन्या मंडल, ज्ञानशाला के सदस्यों ने कव्वाली कर सबका मन मोह लिया। कार्यक्रम का संचालन मुनि भरत कुमार जी ने किया।

मानवता के मसीहा थे आचार्यश्री तुलसी

बोइनपल्ली।

आचार्यश्री तुलसी के जन्म दिवस पर अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए साध्वी मधुस्मिता जी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी का व्यक्तित्व विविधताओं का अपूर्व संगम था। वेशभूषा में जैन मुनि, अणुव्रत के संदेशवाहक होने से मानवता के मसीहा, धर्म क्रांति के सूत्रधार होने से युग प्रवर्तक, सांप्रदायिक एकता के संगायक होने से ईसा मसीह, महान दार्शनिक के रूप में आधुनिक सुकरात, संपूर्ण जीव जगत के साथ भावनात्मक रिश्ते कायम करने वाले करुणामय बुद्ध तथा वीतरागी चेतना के प्रतीक महावीर के रूप में जन-जन की नजरों में रूपायित किया।

साध्वी भावयशा जी ने सुमधुर गीत व साध्वी सहजयशा जी ने श्रद्धा समर्पित विचारों की प्रस्तुति दी। विनोद वैद ने स्वागत भाषण दिया। संपतमल नौलखा, महासभा की ओर से मुकेश सुराणा, सभामंत्री सुशील संचेती, तेयुप मंत्री वीरेंद्र घोषल, टीपीएफ की ओर से नवीन सुराणा, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष प्रकाश भंडारी, महिला मंडल अध्यक्ष अनीता गीडिया ने विचार रखे। लाडनूं की ओर से सतीश दुगड़ व सरिता दुगड़ ने सहसंगान किया। कार्यक्रम का मंगलाचरण श्वेता बैंगाणी, ममता दुगड़ एवं रत्ना दुगड़ ने किया। आभार ज्ञापन राकेश धाड़ेवा ने किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी स्वस्थप्रभा जी ने किया।

आचार्यश्री तुलसी जन्मोत्सव

जसोल।

तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में पुराना ओसवाल भवन में मुनि धर्मेश कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ धर्मसंघ के नवम आचार्य तुलसी का १०८वाँ जन्मदिवस मनाया गया।

सर्वप्रथम अणुव्रत प्रभारी भूपतराज कोठारी ने आचार्यश्री तुलसी, भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ० राजेंद्र प्रसाद व तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के अणुव्रत आंदोलन को आगे बढ़ाने की भूमिका पर प्रकाश डाला। आचार्य तुलसी की जीवनी व संचालन मुनि यशवंत कुमार जी द्वारा किया गया।

मुनि डॉ० विनोद कुमार जी द्वारा स्वयं व मुनि धर्मेश कुमार जी को दीक्षित शिक्षित बताया। कार्यक्रम में तेयुप अध्यक्ष जितेंद्र मांडोत, कन्या मंडल से दिव्या बोकड़िया व महिला मंडल से लीला देवी छाजेड़ ने आचार्य तुलसी की जीवनी पर प्रकाश डाला। तेमम ने गीतिका की प्रस्तुति दी। आभार ज्ञापन सभा मंत्री माणकचंद संखलेचा ने किया।

आचार्य तुलसी विकास पुरुष थे

हैदराबाद।

साध्वी काव्यलता जी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी संत परंपरा में एक विशिष्ट महापुरुष थे, जिन्होंने तेरापंथ धर्मसंघ को विकास के ऐसे सौपान दिए, जिससे संघ की गतिशीलता प्रवर्धमान है। आचार्य तुलसी विकास पुरुष थे। जन्म से ही विलक्षण प्रतिभा के धनी बालक तुलसी ने ग्यारह वर्ष की अल्प आयु में तेरापंथ के अष्टमाचार कालूगणी के चरणों में दीक्षित होकर अपने आपको श्रावक संघ की सेवा और मानवता के लिए सेवा में समर्पित कर दिया।

प्रभात फेरी अणुव्रत रैली के रूप में निकानी गई। तेरापंथ सभा, महिला मंडल, ज्ञानशाला, तेयुप के साथ बोलाराम स्कूल के बच्चों ने उत्साह के साथ भाग लिया। कार्यक्रम का मंगलाचरण तेमम के मंगल संगान से हुआ। सभाध्यक्ष रतनलाल सुराणा ने सभी का स्वागत किया। तेरापंथ सभा, सिकंदराबाद के अध्यक्ष सुरेश सुराणा, टीपीएफ के अध्यक्ष मोहित बैद, जैन सेवा संघ के कोषाध्यक्ष अशोक संचेती ने आचार्य तुलसी को श्रद्धा सुमन अर्पित किए। कार्यक्रम का संचालन साध्वी ज्योतियशा जी ने किया। साध्वी सुरभिप्रभा जी व नवनीत छाजेड़, प्रेरणा सुराणा, प्राची मालू ने सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की। बोलाराम स्थानकवासी समाज के वरिष्ठ श्रावक आनंद स्वरूप बोहरा ने आचार्य तुलसी के केवल तेरापंथ के ही नहीं पूरे जैन समाज के तेजस्वी आचार्य बताते हुए उनके साहित्य को उच्च कोटि का साहित्य बताया। उन्होंने भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा नामांकित आचार्य तुलसी का सिक्का प्रवचन सभा में आए सभी को स्मृति चिह्न के रूप में प्रदान किया।

आचार्य तुलसी का महान अवदान - अणुव्रत

राजाराजेश्वरी नगर।

शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी के सान्निध्य में आचार्यश्री तुलसी का १०८वाँ जन्म दिवस अणुव्रत दिवस के रूप में अणुव्रत समिति के तत्त्वावधान में आयोजित किया गया। साध्वीवृंद द्वारा नमस्कार महामंत्रोच्चार के पश्चात तेमम ने तुलसी अष्टकम के संगान से मंगलाचरण किया। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष मनोज डागा, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष शांतिलाल पोरवाल ने समायोजित जनमेदिनी के स्वागत में विचार रखे।

शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी प्रखर व्यक्तित्व व कर्तृत्व संपन्न थे। उन्होंने तेरापंथ धर्मसंघ को नई ऊँचाइयाँ तथा नया भविष्य दिया। शासनश्री साध्वी मंजुरेखा जी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी ने सबसे पहले शिक्षा के क्षेत्र में विकास किया।

तेयुप अध्यक्ष सुशील भंसाली, तेमम अध्यक्षा लता बाफना, कंचन छाजेड़, शोभा बोथरा, हेमलता सुराणा, तेरापंथ टाइम्स के संपादक दिनेश मरोठी, आरआर नगर कन्या मंडल, महिला मंडल, देवराज रायसोनी आदि अनेक वक्ताओं ने अपने विचार रखे एवं गीतिकाओं का संगान किया।

साध्वी मंजुरेखा जी, साध्वी उदितप्रभाजी, साध्वी निर्भयप्रभा जी, साध्वी चेलनाश्रीजी ने मधुर स्वर लहरी में भक्तिमय श्रद्धांजलि समर्पित की। १०८ भाई-बहनों ने १ वर्ष के लिए विभिन्न प्रत्याख्यान किए। अणुव्रत समिति के मंत्री माणकचंद संचेती ने संचालन किया। आरआर नगर तेरापंथ सभा मंत्री विक्रम मेहर ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम में पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही। आरआर नगर सभा द्वारा अणुव्रत समिति के सभी पदाधिकारियों का जैन पट्ट से सम्मान किया गया।

आचार्यश्री तुलसी जन्म दिवस

राजलदेसर।

साध्वी डॉ० परमयशा जी के सान्निध्य में आचार्यश्री तुलसी का जन्म दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। नमस्कार महामंत्र से शुरु हुए कार्यक्रम में डॉ० साध्वी परमयशा जी ने गुरुदेव तुलसी के बारे में कहा कि पूज्य गुरुदेव की अध्यात्म निष्ठा, आगम निष्ठा, आत्मनिष्ठा का जितना गौरव गाएँ उतना कम है। उनकी प्रशासन शैली, लेखन शैली, प्रवचन शैली, संवाद शैली और गायन शैली बेजोड़ थी। जननायक, महानायक गुरुदेव एक महान परिव्राजक थे।

कार्यक्रम का मंगलाचरण साध्वी कुमुदप्रभा जी ने अपने सुमधुर स्वर लहरियों के साथ किया। महिला मंडल ने शब्द चित्र के माध्यम से प्रस्तुति दी व गीत का संगान किया। ज्ञानशाला के नन्हे-नन्हे ज्ञानार्थियों ने गीत पर रोचक प्रस्तुति दी।

दूसरे चरण में अणुव्रत समिति का कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस अवसर पर साध्वीश्री जी ने कहा कि अणुव्रत आंदोलन आचार्यश्री तुलसी की एक प्रमुख देन है। आचार्यश्री तुलसी के जन्म दिवस को 'अणुव्रत दिवस' के रूप में मनाया जाता है। अणुव्रत दिवस को मनाने की सार्थकता पर साध्वीश्री जी ने कहा कि अणुव्रत की आचार संहिताओं का पालन जरूरी है।

इस अवसर पर राजलदेसर अणुव्रत समिति के नव नियुक्त पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी सदस्यों ने शपथ ग्रहण की। अणुव्रत समिति के निवर्तमान अध्यक्ष लाभचंद सोनी ने नवमनोनीत अध्यक्ष शंकरलाल सोनी को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। तत्पश्चात अध्यक्ष शंकरलाल सोनी ने अन्य पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी सदस्यों को शपथ दिलाई एवं कार्यसमिति का परिचय दिया।

तृतीय चरण में साध्वी डॉ० परमयशा जी एवं सहवर्ती साध्वियों ने गीत का सुमधुर संगान किया।

चौथे चरण में तेरापंथी सभा, तेमम, तेयुप, तेरापंथ कन्या मंडल, किशोर मंडल एवं ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा आचार्य तुलसी के साहित्य का सुंदर नजारा दिाया गया। तुलसी साहित्य की कमेंट्री में कन्या मंडल की मीनाक्षी बुच्चा एवं आरती बैद ने साहित्य सुमन का परिचय दिया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी विनम्रयशा जी ने किया।

व्यक्तित्व के धनी आचार्यश्री तुलसी

सिकंदराबाद।

तेरापंथ भवन में शासनश्री साध्वी जिनरेखा जी के सान्निध्य में आचार्यश्री तुलसी का जन्म दिवस अणुव्रत दिवस के रूप में मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल के गीत से हुआ। साध्वीश्री जी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी जन्म से महान थे। आचार्यश्री तुलसी संपूर्ण श्रमण परंपरा के अद्वितीय तेज पुंज थे। आपके तेजस्वी, ओजस्वी, वर्चस्व व्यक्तित्व ने जैन धर्म को व्यापकता प्रदान की।

महिला मंडल, ज्ञानशाला, तेयुप, अणुव्रत आदि अनेक संस्थाओं के रूप में धर्मसंघ को अवदान दिए। तेरापंथ धर्मसंघ में विकास के नव द्वार खुले। साध्वी मधुरयशा जी, साध्वी श्वेतप्रभा जी ने कविता प्रस्तुत की। साध्वी धवलप्रभा जी, साध्वी मादर्वयशा जी ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए। राजकुमार सांखला ने गीत की प्रस्तुति दी। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष सुरेश सुराणा ने स्वागत भाषण में सबका अभिनंदन किया। संपत नौलखा, बाबूलाल सुराणा, ज्ञानशाला आंचलिक संयोजिका अंजु बैद, टीपीएफ के अध्यक्ष मोहित बैद, महिला मंडल अध्यक्षा अनिता गीडिया, जैन सेवा संघ के अध्यक्ष अशोक बरमेचा ने अपने विचार व्यक्त किए। मंजु सुराणा और शांता बैद तथा कन्या मंडल की कन्याओं ने गीत की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम में हिंदी मिलाप से संपादिका सरिता बैद व वार्ता हिंदी के संपादक धीरेंद्र प्रताप भी उपस्थित थे एवं जैन तेरापंथ ट्रस्ट की ओर से मनोज दुगड़ की उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन मंत्री सुशील संचेती ने किया। कार्यक्रम का संचालन लक्ष्मीपत बैद और सहमंत्री राकेश सुराणा ने किया।

✦ *सहिष्णुता भी पारस्परिक सौहार्द के लिए आवश्यक तत्त्व है। कभी छोटे बड़ों को तो कभी बड़े छोटों को सहन करें, यह वांछनीय है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

अभातेयुप की संगठन यात्रा

पर्वत पाटिया।

अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा, उपाध्यक्ष-द्वितीय जयेश मेहता व महामंत्री पवन मांडोत, अभातेयुप साथियों के साथ पर्वत पाटिया पधारे। कार्यक्रम की शुरुआत सामुहिक नमस्कार महामंत्र के साथ हुई, विजय गीत का संगान तेयुप युवा साथियों द्वारा किया गया एवं श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा द्वारा किया गया। नवमनोनीत राष्ट्रीय अध्यक्ष उपस्थित प्रबंध मंडल एवं अभातेयुप सदस्यों का खेश द्वारा स्वागत किया गया।

स्वागत वक्तव्य में तेयुप अध्यक्ष चंद्रप्रकाश परमार ने नवमनोनीत राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा एवं उनकी टीम को २०२१-२३ कार्यकाल के लिए बधाई व अग्रिम शुभकामनाएँ प्रेषित की।

मंत्री भरत जैन ने तेयुप द्वारा की गई गतिविधियों से सदन को अवगत कराया। किशोर मंडल संयोजक जिग्नेश गांधी व सह-संयोजक पारस गंग ने तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा किए गए कार्यों की जानकारी प्रस्तुत की। सभाध्यक्ष कमल पुगलिया, महिला मंडल अध्यक्षा ललिता पारेख व अभातेयुप के क्षेत्रीय प्रभारी कुलदीप कोठारी ने राष्ट्रीय प्रबंध मंडल का स्वागत एवं उनके प्रति शुभकामनाएँ प्रेषित की। राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जयेश मेहता ने अपने वक्तव्य में आचार्यश्री महाश्रमण जी के सूरत पधारने से पहले एटीडीसी खोलने का लक्ष्य रखने पर जोर दिया। राष्ट्रीय महामंत्री पवन मांडोत ने किशोर मंडल के कार्यों की प्रशंसा की। राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा ने अपने वक्तव्य में परिषद को अभातेयुप के सभी आयामों में सहभागिता हेतु प्रेरित किया एवं स्थानीय अभातेयुप क्षेत्रीय प्रभारी कुलदीप कोठारी को सीपीएस का राष्ट्रीय सहप्रभारी नियुक्त किया। कार्यक्रम में ट्रस्टी, तेयुप निवर्तमान अध्यक्ष कांतिलाल सिंघवी, पूर्व अध्यक्ष सुनील रांका, सभा मंत्री, तेयुप परामर्शक, तेयुप कार्यकारिणी सदस्य, किशोर मंडल, महिला मंडल, कन्या मंडल की उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन तेयुप उपाध्यक्ष-द्वितीय दिलीप चावत ने किया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री भरत जैन ने किया।

फल, मिठाई, केक आदि वितरण

साउथ हावड़ा।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा साउथ हावड़ा स्थित बादामी देवी आश्रम के समीप की बस्ती में बच्चों में फल, मिठाई, केक का वितरण किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ सामुहिक नमस्कार महामंत्र के संगान के साथ हुआ। परिषद के अध्यक्ष बिरेंद्र बोहरा ने उपस्थित सभी का स्वागत किया।

कार्यक्रम में उपाध्यक्ष मनीष कुमार बैद, ज्ञानमल लोढ़ा, मंत्री गगन दीप बैद, सहमंत्री अमित बेगवानी आदि अनेक सदस्यगण उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार सामाजिक कार्यों के पर्यवेक्षक अमित बेगवानी ने किया।

नि:शुल्क थायराइड स्क्रीनिंग जाँच शिविर

राजाराजेश्वरी नगर।

तेयुप द्वारा कर्नाटक राज्योत्सव के उपलक्ष्य में आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर के सहयोग से नि:शुल्क थायराइड स्क्रीनिंग जाँच शिविर का आयोजन राजाराजेश्वरी नगर स्थित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर में किया गया। जिसमें कुल १०५ लोगों ने जाँच कराई। शिविर में लोगों को एक्सपर्ट ने थायराइड के लक्षण, कारण और बचाव के बारे में विस्तार से बताया।

प्रायोजक गणपतलाल, दीपक, कार्तिक कोठारी परिवार थे। गणपतलाल कोठारी ने इस शिविर की सराहना करते हुए कहा कि दूसरों के प्रति नि:स्वार्थ सेवा का भाव रखना ही जीवन में कामयाबी का मूल मंत्र है। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में राजराजेश्वरी नगर पुलिस इंस्पेक्टर शिवन्ना भी पधारे, तेयुप के अध्यक्ष सुशील भंसाली, उपाध्यक्ष अमित नौलखा, धर्मेश नाहर, मंत्री विकास छाजेड़, आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर के प्रभारी संजय बैद सहित अन्य पदाधिकारीगण एवं कार्यसमिति सदस्य आदि का सहयोग प्राप्त हुआ।

वृद्धाश्रम में सेवा कार्य

बेहाला।

महापर्व दीपावली के उपलक्ष्य में तेयुप द्वारा शांति निवास वृद्धाश्रम के सदस्यों को अत्यंत हर्षोल्लास से जलपान कराया एवं उन्हें दीपावली पर एकांतवास के अंधेरे से दूर कर परिवार का आनंद प्रदान किया। कार्यक्रम का शुभारंभ वृद्धाश्रम की संयोजिका रीना सेन ने मंगलाचरण करते हुए तेयुप, बेहाला के सभी सदस्यों के लिए शुभाशीष व मंगलकामना हेतु प्रार्थना की। इस सेवा कार्य में सभी सदस्यों का पूर्ण योगदान रहा।

कार्यक्रम हनुमानमल सेठिया के सौजन्य से संपन्न हुआ। उन्होंने अपनी धर्मपत्नी राजश्री सेठिया के जन्मदिवस के उपलक्ष्य पर इस कार्यक्रम को संचालित करने में अपना आर्थिक योगदान दिया। परिषद के अध्यक्ष चेतन चोपड़ा, मंत्री अभिषेक बैंगानी, कोषाध्यक्ष रतन सेठिया, संगठन मंत्री राहुल मनोत, पूर्व अध्यक्ष मोहित धारीवाल एवं सहमंत्री-द्वितीय सिद्धार्थ धारीवाल का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

खुशियों की दिवाली

जयपुर।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप, जयपुर के निर्देशन में तेरापंथ किशोर मंडल के सदस्यों ने मानसरोवर स्थित झुग्गी-झोंपड़ियों में निवास करने वाले जरूरतमंद परिवारों में गर्म कंबल व मिठाई का वितरण कर उनके संग खुशियों की दिवाली मनाई।

इस अवसर पर जयपुर के अध्यक्ष राजेश छाजेड़, मंत्री सुरेंद्र नाहटा, कोषाध्यक्ष करण नाहटा, आदि अनेक सदस्यों की उपस्थिति रही।

चतुर्थ अस्थि चिकित्सा शिविर

पूर्वांचल-कोलकाता।

अस्थि चिकित्सा संबंधी बात जब आती है तो पूरे भारत वर्ष में एक नाम चिकित्सकों की अग्रणी श्रेणी में आता है वह है—डॉ० धीरज मरोठी का। एक ऐसे चिकित्सक जिन्होंने १५००० से अधिक घुटनों के सफल ऑपरेशन एवं अनगिनत रोगियों का उपचार किया।

एटीडीसी पूर्वांचल के लिए यह गौरव का विषय है कि ऐसे चिकित्सक हमसे जुड़े हुए हैं। डॉ० मरोठी के नेतृत्व में एक बार फिर से अस्थि चिकित्सा शिविर का आयोजन एटीडीसी में किया गया। २४ व्यक्तियों ने इस शिविर में चिकित्सा का लाभ लिया।

एटीडीसी के प्रभारी व तेयुप पूर्वांचल के कार्यसमिति सदस्य नरेंद्र छाजेड़ के विशेष श्रम और तेयुप पूर्वांचल-कोलकाता के अध्यक्ष विकास सिंघी एवं किशोर मंडल से खुशाल बैद की उपस्थिति से कैंप अत्यंत सफल रहा।

✦ *व्यक्तियों के समूह से समाज का निर्माण होता है, इसलिए समाज व्यक्ति से बड़ा होता है। एक व्यक्ति के चिंतन की तुलना में समाज अथवा संगठन का चिंतन महत्त्वपूर्ण होता है।*
– आचार्यश्री महाश्रमण

अणुव्रत दिवस पर कार्यक्रम एवं कार्यशाला

पेटलावद।

मुनि वर्धमान कुमार जी के सान्निध्य में आचार्यश्री तुलसी के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रम व कार्यशाला आयोजित हुई। मुनि वर्धमान कुमार जी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी २२ वर्ष की युवा अवस्था में आचार्य पद पर सुशोभित हो गए और धर्मसंघ को संभाला। आचार्यश्री का आचार्य काल बहुत लंबा रहा। हमें उनके गुणों को जीवन में अपनाने का प्रयास करना चाहिए।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रतलाम-झाबुआ, अलीराजपुर क्षेत्र के सांसद गुमानसिंह डामोर ने कहा कि व्रत वह जो आत्मा और बुराई के बीच दीवार बनकर खड़ा रहता है। आचार्य तुलसी अद्भुत व्यक्तित्व के धनी थे। उन्होंने जीवन भर विश्व-शांति और भाईचारे का संदेश दिया।

कार्यक्रम के दौरान तेयुप, पेटलावद द्वारा युवा और अणुव्रत विषय पर आयोजित कार्यशाला में सूरत से समागत मुख्य वक्ता, अणुविभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष युवा गौरव राजेश सुराणा ने कहा कि जहाँ अनुशासन, विनम्रता, अध्यात्म, संविभाग, समर्पण, श्रम और तेजस्विता है, इन सारे गुणों के समुच्चय का नाम है—तेरापंथ।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि सांसद गुमानसिंह डामोर का तेरापंथ सभा पेटलावद की ओर से सभाध्यक्ष विनोद भंडारी व मंत्री लोकेश भंडारी द्वारा मोमेंटो भेंट कर सम्मान किया गया। युवा गौरव राजेश सुराणा का तेयुप उपाध्यक्ष पंकज मूणत, मंत्री महेश भंडारी व अभातेयुप जेटीएन प्रतिनिधि पंकज पटवा ने तथा सांसद प्रतिनिधि राजेश कांसवा का तेयुप अध्यक्ष रूपम पटवा व प्रदीप पालरेचा द्वारा दुपट्टा ओढ़ाकर व साहित्य भेंट कर सम्मान किया।

मंगलाचरण कन्या मंडल व महिला मंडल की बहनों ने संयुक्त रूप से किया। स्वागत भाषण तेरापंथी सभा अध्यक्ष विनोद भंडारी ने किया। अतिथि परिचय अभातेयुप क्षेत्रीय सहयोगी व स्थानीय तेयुप अध्यक्ष रूपम पटवा ने किया। संचालन फूलचंद कांसवा व आभार तेरापंथी सभा के मंत्री लोकेश भंडारी ने किया। मुनि वर्धमान कुमार जी ने नेहा मयंक भंडरी को ३१ उपवास की दीर्घ तपस्या का प्रत्याख्यान करवाया।

आचार्यश्री तुलसी का जन्मोत्सव

इंदौर।

आचार्यश्री तुलसी के १०८वें जन्मोत्सव पर मुनि कमल कुमार जी ने कहा कि हम परम सौभाग्यशाली हैं, जिन्हें इस कलिकाल में भी जैन धर्म और तेरापंथ धर्मसंघ मिला। गुरुदेव श्री तुलसी ने इस संघ की गरिमा-महिमा जो बढ़ाई है उसे युग नई शताब्दियों तक स्मरण करता रहेगा।

आज जो हम तेरापंथ धर्मसंघ का सारे जैन समाज में मान-सम्मान देख रहे हैं, यह आचार्यश्री तुलसी के सुश्रम का ही प्रताप है, इन्होंने अणुव्रत आंदोलन चलाकर देश के प्रथम नागरिक राष्ट्रपति जैसे महान व्यक्तित्व को प्रभावित किया। देश-विदेश में तेरापंथ की विस्तृत चर्चा हुई।

तेयुप, महिला मंडल, अणुव्रत समिति, कन्या मंडल, ज्ञानशाला, समणश्रेणी आदि-आदि अनेक आयाम हैं, जो उत्तरवर्ती आचार्यों के प्रोत्साहन से सभी आयाम निरंतर गतिमान हैं। इस अवसर पर कई प्रकार के त्याग-प्रत्याख्यान का क्रम भी चला।

मुनि अमन कुमार जी, मुनि नमि कुमार जी, निलेश रांका, निलेश पोखरना, अजीत जैन, मनोज सुराणा आदि अनेक सदस्यगणों ने भी अपने गीत एवं उद्गारों द्वारा अपने श्रद्धासिक्त भाव प्रकट किए। इस अवसर पर अभिग्रह धारी तपस्वी राजेश मुनि ने भी अपने विचार प्रकट करते हुए उनके कार्यों की सराहना की।

जेल सुधार प्रशिक्षण केंद्र में कार्यक्रम

मुंबई।

आचार्यश्री तुलसी के १०८वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रम का आयोजन अणुव्रत समिति, मुंबई के स्थायी प्रकल्प जेल सुधार प्रशिक्षण केंद्र डोंगरी होम में रखा गया। मुख्य वक्ता जयश्री बड़ाला ने बच्चों को जीवन में सही राह पर चलने एवं नशे से दूर रहने की प्रेरणा दी।

सहमंत्री प्रियंका सिंघवी ने सभी का स्वागत करते हुए खेल-खेल में बच्चों को अच्छी सीख दी। मंत्री वनिता बाफना ने मुख्य वक्ता जयश्री बड़ाला एवं किरण डागलिया का सम्मान एवं आभार व्यक्त किया।

इस कार्य में सहमंत्री अंजु कोठारी, कोषाध्यक्ष लतिका डागलिया, क्षेत्रीय संयोजक किशन राठौड़, प्रवीण डागलिया, बंशीलाल धाकड़, नाइक, संगीता राठौड़, रेणु डागलिया, ईशिता राठौड़ आदि का सराहनीय सहयोग रहा।

विराट युवा सम्मेलन 'अभ्युदय' का आयोजन

केसिंगा।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में ओडिशा, आंध्र प्रदेश और छत्तीसगढ़ स्तरीय विराट् युवा सम्मेलन 'अभ्युदय' मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में तेयुप, केसिंगा द्वारा आयोजित किया गया। अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा ने विराट युवा सम्मेलन 'अभ्युदय' के उद्घाटन की घोषणा करते हुए श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन करवाया।

इस अवसर पर युवाओं को 'कार्यकर्ता की अर्हताएँ' विषय पर संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि युवा समाज की तकदीर व तस्वीर है। युवा समाज का यथार्थ बिंब है। युवा शक्ति व ऊर्जा का पुंज है। युवा उत्साह का पर्याय है। युवा राष्ट्र की अमर संपदा है। युवा क्रांति का संवाहक है। युवा वायु की तरह गतिशील होता है। उन्होंने आगे कहा—युवा कार्यकर्ता की अर्हता् के प्रमुख सूत्र हैं—संयम, साहस, सेवा, समता, सादगी, सदाचार व श्रम। यह सात सकार जिस युवा में होते हैं वह श्रेष्ठ कार्यकर्ता बन जाता है। कार्यकर्ता श्रावक कार्यकर्ता बनें यह अपेक्षा है। युवा व्यसनमुक्त रहे। युवा निस्वार्थ भाव से समय प्रबंधन के साथ संघ की सेवा करें। अपनी आस्था व शक्ति को विभाजित होने से बचाएँ। युवा देव, गुरु, धर्म के प्रति निष्ठाशील बना रहे। अनेक गुणों के विकास से ही युवाओं का अभ्युदय संभव है। कार्यकर्ता वही सफल होता है जो नाम व पद की दौड़ से बाहर रहकर निस्वार्थ भाव से कार्य करता रहता है।

ध्वजारोहण से कार्यक्रम का शुभारंभ होने के पश्चात तेरापंथ कन्या मंडल ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। विजयगीत का संगान तेयुप सदस्यों द्वारा किया गया।

अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा ने अपने वक्तव्य में 'कैसे हो युवाओं का अभ्युदय' विषय पर युवाओं को संबोधित करते हुए कहा कि जब तक हम नई नीति की ओर नहीं बढ़ेंगे तब तक अभ्युदय नहीं हो सकता। उन्होंने पाँच सूत्र के साथ जीवन में अभ्युदय की प्रेरणा देते हुए कहा—अभ्युदय के लिए एक नीति, अच्छी संगति, निरंतर प्रगति, उचित अवगति और श्रेष्ठ प्रस्तुति होनी चाहिए।

अभातेयुप सहमंत्री प्रथम अनंत बागरेचा ने युवाशक्ति को आह्वान किया कि आगे चारित्रात्माओं के विहार में सेवा-उपासना के साथ विशेष रूप से जुड़ना है।

मुख्य वक्ता पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष विमल कटारिया ने युवाओं को अपने अंदाज में 'हमारा संगठन हमारी शक्ति' विषय पर प्रशिक्षण प्रदान किया। उन्होंने संगठन से जुड़ने के फायदे व मायने बताए, उन्होंने कहा कि गुरु की दृष्टि की आराधना कर युवा शक्ति अपने आपको संघ के कार्यों में अवश्य नियोजित करे और संगठन से जुड़ने का व अन्य साथियों को जोड़ने का प्रयास करें।

ओडिशा प्रांतीय जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष मुकेश जैन ने अपने विचार व्यक्त किए। केसिंगा शाखा प्रभारी गौतम जैन ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कार्यक्रम की सफलता के लिए शुभकामना संप्रेषित की।

बाल मुनि कुणाल कुमार जी ने 'अभ्युदय' गीत, एटीडीसी के सलाहकार निर्मल बैंगानी ने अतिथियों का परिचय, सभा उपाध्यक्ष नंदकिशोर जैन, उत्केला तेयुप मंत्री सौरभ जैन ने गीत, बलांगीर तेयुप सदस्य अमित जैन ने गीत, केसिंगा पूर्व अध्यक्ष अनूप जैन, तेयुप रायपुर से मनीष जैन ने अपनी भावाभिव्यकित दी।

सम्मेलन में अभातेयुप क्षेत्रीय सहयोगी गौतम जैन, अभिषेक जैन, समिति सदस्य ऋषभ जैन सहित विशाखापट्टनम, रायपुर, जगदलपुर, कांटाबांजी, सिंधीकेला, टिटिलागढ़, केसिंगा, बंगोमुंडा, बेलपाड़ा, रायपुर-पटनागढ़, उत्केला, बलांगीर, कटक, भुवनेश्वर आदि क्षेत्रों की शाखा परिषदों के सदस्य अच्छी संख्या में उपस्थित थे।

आभार ज्ञापन स्थानीय तेयुप मंत्री विकास जैन ने किया। दोनों सत्रों का संचालन मुनि परमानंद जी व जेटीएन प्रभारी अरुण जैन ने संयुक्त रूप से किया।

मुनि जिनेश कुमारजी ने मंगलपाठ के साथ सम्मेलन के कार्यक्रम का समापन हुआ। कार्यक्रम को सफल बनाने में तेयुप कार्यकर्ताओं, स्थानीय सभा आदि का भी सहयोग प्राप्त हुआ।

आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर एवं आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल सेंटर का शुभारंभ

मैसूर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्त्वावधान में मैसूर तेयुप द्वारा द्वितीय आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर व प्रथम महाप्रज्ञ मेडिकल स्टोर का शुभारंभ मैसूर क्षेत्र की टीके लेआउट में वृहद स्तर से अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा, राष्ट्रीय महामंत्री पवन मांडोत के नेतृत्व में तथा निवर्तमान राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष दिनेश पोखरना, राष्ट्रीय एटीडीसी प्रभारी अर्पित नाहर, पूर्व अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष विमल कटारिया एवं अभातेयुप टीम, मैसूर चामुंडेश्वरी क्षेत्रीय एमएलए जीटी देवगौड़ा, चामराज क्षेत्रीय एमएलए एल नागेंद्र, मैसूर मेयर सुनंदा पालनेत्रा आदि गणमान्य लोगों की उपस्थिति में तेयुप ने द्वितीय आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर मल्टी स्पेशलिटी व आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल स्टोर का लोकार्पण किया।

इस अवसर साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने कहा—'संकल्प की लौ जलती रहे'। मैसूर तेयुप ने उत्साह और निष्ठा के साथ कार्यक्रम को संपादित किया। अभातेयुप के निवर्तमान और वर्तमान टीम का शुभ आगमन हुआ है। श्रम की बूँदों से इतिहास बनता है। गुरु महाश्रमण के नेतृत्व में तेरापंथ समाज आगे बढ़ रहा है। शुभ संयोग से अच्छे कार्य संपादित हों रहे हैं। युवाशक्ति पूर्ण निष्ठा भाव से दायित्व निर्वहन करे और संघ संपदा को बढ़ाए। जमीनी कार्यकर्ता के रूप में राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा और उनके साथ उत्साही महामंत्री पवन मांडोत दोनों ही सशक्त व्यक्तित्व के धनी हैं। जरूरत है हर व्यक्ति उपयोगी बना रहे। उपयोगिता सफलता प्रदान करती है।

कार्यक्रम में मैसूर अर्बन डेवलपमेंट ऑथोरिटी चेयरपर्सन एच०वि० राजीव, क्षेत्रीय पार्षद गोपी व सविता सुरेश की उपस्थित रही।

मैसूर तेयुप अध्यक्ष विक्रम पितलिया ने सभी का स्वागत किया। मुख्य सहयोगी प्रकाश दक ने तेयुप, मैसूर के कार्यों को सराहा और आगे भी ऐसे मानवीय सेवा के कार्य करते रहें।

साध्वी राजुलप्रभा जी व गणमान्य व्यक्तियों ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में अभातेयुप से तेरापंथ टाइम्स के संपादक दिनेश मरोठी, किशोर मंडल प्रभारी विशाल पितलिया, सीपीएस प्रभारी सतीश पोरवाड़, राकेश दक, विनोद मूथा, गौतम खाब्या सहित राजस्थान के सभी जैन व अन्य समाज के संस्थाओं के गणमान्य पदाधिकारियों की उपस्थिति रही। एटीडीसी के मुख्य प्रायोजक प्रकाश दक, सह-प्रायोजक उत्तम भटेवरा व नाथूलाल मेहर परिवार व सभी सहयोगियों का सम्मान तेयुप द्वारा किया गया।

कार्यक्रम का संचालन सुनील देरासरिया, गौरव मेहता व उद्घाटन के संयोजक दिनेश दक ने किया। आभार एटीडीसीप्रभारी मुकेश गुगलिया ने किया। कार्यक्रम का लाइव प्रसारण तेयुप, मैसूर के फेसबुक पेज व जेटीएन के पेज पर लकी श्रीमाल व संगठन मंत्री विनोद मुणोत ने किया।

प्रतियोगिता का आयोजन

भीलवाड़ा।

तेयुप के तत्त्वावधान में तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा आयोजित 'कौन बनेगा ज्ञानवान' का आयोजन किया गया। कुल ७ टीम थी। प्रत्येक टीम में ३-३ प्रतिभागी थे। इस प्रतियोगिमा के जज नवीन चोरड़िया व दिलीप रांका थे। तेरापंथ किशोर मंडल के प्रभारी दिनेश रांका, तेयुप अध्यक्ष संदीप चोरड़िया व तेयुप के मंत्री पीयूष रांका, तेयुप कोषाध्यक्ष संतोष सिंघी कार्यक्रम में उपस्थित थे।

कुल राउंड की एंकरिंग ब्लू ब्रिगेड मेंबर ऋषि दुगड़, किशोर मंडल के संयोजक मनन चोरड़िया, किशोर मंडल के सह-संयोजक नयन रांका व विदित चोरड़िया ने की। प्रथम स्थान पर संयम टीम, द्वितीय स्थान पर दर्शन टीम, तृतीय स्थान पर ज्ञान टीम रही। इन सभी को तेयुप के सदस्य जज व किशोर मंडल के सदस्यों ने सम्मानित किया। किशोर मंडल द्वारा जजों को भी सम्मानित किया गया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
29 नवंबर - 5 दिसंबर, 2021

✦ *पत्नी, पुत्र और पैसे की प्राप्ति तो एक पापी को भी हो सकती है, किंतु सत्संग और धर्मकथा-श्रवण का अवसर दुर्लभ होता है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ावासियो! धर्म की लौ सदैव जलाए रखना : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, १६ नवंबर, २०२१

महामनीषी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान कराते हुए फरमाया कि कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा है। चतुर्मास का अंतिम दिन आ गया है। कई चीजों में आदि भी होती है, तो अंत भी होता है। कोई-कोई चीज जिसकी आदि भी नहीं होती है और अंत भी नहीं होता है। कोई-कोई चीज जिसकी आदि तो नहीं होती, परंतु अंत होता है। जैसे जीव की सांसारिक अवस्था है, जिसका आदि बिंदु तो नहीं है, पर मोक्ष आत्मा का अंत बिंदु हो सकता है।

जीव तो अनादि-अनंत है। चतुर्मास हो या आदमी का जीवन उसकी आदि भी है और अंत भी होता है। चतुर्मास सादिसांत है। चतुर्मास की संपन्नता के दिन में राजा परदेशी का एक व्याख्यान बताना चाहता हूँ।

राजा परदेशी नास्तिक विचारधारा वाला आदमी था। पर साथ में तार्किक अपने सिद्धांत को जानने वाला था। कुमार श्रमण केशी बड़े ज्ञानी महापुरुष थे। किसी तरीके से राजा परदेशी को उनके पास पहुँचा दिया गया। आत्मा और शरीर के बारे में विस्तार से चर्चा चली। प्रसंग को विस्तार से समझाया। अंत में परदेशी राजा को प्रतिबोधित किया। लोहबाणिये की घटना से उसे समझाया। नास्तिक से आस्तिक बन गृहस्थ-श्रावक का धर्म को स्वीकार कर श्रमणोपासक बन गया। धर्म की आराधना करने लगा। कुमार श्रमण केशी ने अंत में शिक्षा फरमायी कि राजन्! हमारे जाने के बाद तुम रमणीय से अरमणीय मत बन जाना। प्रसंगों से समझाया।

मैं तो भीलवाड़ा की जनता, श्रावक समाज को राजा परदेशी मानकर आप लोगों से कह रहा हूँ कि आप लोग रमणीय बनकर अरमणीय मत बन जाना। आपने जो धर्म-ध्यान, त्याग-व्रत स्वीकार किए हैं, उनको भूल मत जाना, पालने की जागरूकता रखना। चतुर्मास में जो धर्म की चेतना जगी है, उसे बनाए रखना।

भीलवाड़ा में चतुर्मास हुआ, भीलवाड़ा में शांति रहे। लोगों में धार्मिक-आध्यात्मिक चेतना बनी रहे। यह हमारी आप सबके प्रति मंगलकामना है। आप सबसे हमारा खमतखामणा भी है। विहार का समय प्रातः ८:४१ बजे करने की घोषणा की। भीलवाड़ा के डीएम शिवप्रसाद एम नकाते ने अपनी भावाभिव्यक्ति व्यक्त करते हुए कहा कि आचार्यश्री ने जिस तरह से कोरोना की गाइडलाइन का स्वयं पालन करते हुए अपने अनुयायियों को अनुपालित कराया, वह अविस्मरणीय है। आपके संदेश पूरी दुनिया का कल्याण करने वाले हैं। आपकी आगे की यात्रा मंगलमय हो। एसपी आदर्श सिद्धू ने भी अपनी अभिव्यक्ति देते हुए कहा कि मुझे आप जैसे महासंत के दर्शन करने का सौभाग्य मिला। हमारी सुरक्षा व्यवस्था आपकी सेवा में निरंतर संलग्न है। आपके दर्शन का अवसर हमें मिलता रहे, मैं ऐसी कामना करता हूँ।

प्रवचन में भीलवाड़ा के जिलाधीश शिवप्रसाद एवं नकाते, पुलिस अधीक्षक आदर्श सिद्धू ने अपनी भावना व्यक्त की एवं आगे की यात्रा के लिए मंगलकामना की। उन्होंने कहा कि प्रवचन में प्रवास व्यवस्था समिति, भीलवाड़ा और मर्यादा महोत्सव समिति, बीदासर के मध्य व्यवस्था हस्तांतरण का कार्यक्रम आयोजित हुआ।

बीदासर मर्यादा महोत्सव समिति के पदाधिकारियों द्वारा २०२२ मर्यादा महोत्सव का लोगो श्रीचरणों में लोकार्पित किया गया। मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति के अध्यक्ष कन्हैयालाल गीड़िया ने अपनी विचाराभिव्यक्ति दी। आचार्य महाश्रमण चतुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष प्रकाश सुतरिया ने अपनी आस्थासिक्त अभिव्यक्ति दी। चतुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति के पदाधिकारियों ने बीदासर मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति के पदाधिकारियों को ध्वज हस्तांतरित किया और इसके साथ ही व्यवस्थाओं का भी हस्तांतरण हो गया। आचार्यश्री ने दोनों व्यवस्था समिति के पदाधिकारियों आदि को मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। बीदासर समाज द्वारा गीत का संगान किया गया।

महेंद्र ओस्तवाल ने लिखित त्याग प्रत्याख्यान का निवेदन श्रीचरणों में अर्पित किया। राजेंद्र भलावत, निर्मल गोखरू, नवरत्नमल झाबक, मोहन सिंह भंडारी, शंकरलाल पितलिया, महिला मंडल अध्यक्ष मीना बाबेल, मंत्री रेणु चोरड़िया, लादुलाल हिरण, जसराज चोरड़िया, प्रदीप भंडारी, चंद्रप्रकाश सिंघवी, रतन भालावत, जेठमल चौधरी, अनिता हिरण, पीयूष रांका, ओम नौलखा, अणुव्रत समिति अध्यक्ष आनंदबाला टोडरवाल, प्रोफेशनल फोरम अध्यक्ष राकेश सुतरिया, तेयुप अध्यक्ष संदीप चोरड़िया ने मंगलकामना व्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अहिंसा यात्रा : चित्रमय झलकियाँ

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **संदीप कोठारी** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**